website : - www.loktantramirror.live

लोकतंत्र मिरर

पृष्ठ : 8 RNI Reg. No. MAHHIN/2017/74134 वर्ष : 9 अंक : 39 अप्रैल 2025 मूल्य : रु. 10

आरएसएस अमर संस्कृति का वट वृक्ष : नरेंद्र मोदी

| 'सेवा है अग्नि कुंड, समिधा जैसे हम चले।' | हम देव से देश, राम से राष्ट्र का मंत्र लेकर चल रहे | स्वयंसेवक के हृदय में एक भाव हमेशा चलता रहता है।

नागपुर : संघ के शताब्दी वर्ष में पीएम मोदी ने संघ मुख्यालय का दौरा ३० मार्च को किया। प्रधानमंत्री बनने के बाद पीएम मोदी का संघ मुख्यालय का यह पहला दौरा है और इस दौरे को काफी अहम माना जा रहा है।

महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने नागपुर एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी आरएसएस के स्मृति मंदिर पहुंचे और उन्होंने आरएसएस के संस्थापक डॉ. हेडगेवार को श्रद्धांजलि दी। और माधव सदाशिव गोलवलकर की समाधि पर श्रद्धांजलि की।

प्रधानमंत्री ने माधव नेत्रालय की नई बिल्डिग की आधारशिला रखी प्रधानमंत्री ने माधव नेत्रालय प्रीमियम सेंटर की नई एक्सटेंशन बिल्डिग की आधारशिला रखी। यह आई इंस्टीट्यूट और रिसर्च सेंटर का एक नया विस्तार है, जिसे साल २०१४ में गोलवलकर की याद में स्थापित किया गया था। इस सेंटर में २५० बेड का अस्पताल, १४ आउट पेशेंट डिपार्टमेंट, और १४ आधुनिक ऑपरेशन थिएटर होंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने नागपुर में दीक्षाभूमि का भी दौरा किया। यह वह स्थान है जहां डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर और उनके अनुयायियों ने बौद्ध धर्म अपनाया था। पीएम मोदी ने महात्मा बुद्ध की भी पूजा की। इस दौरान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस भी साथ मौजूद रहे। इस अवसर पर पीएम नरेंद्र मोदी ने र कहा कि एक "विकसित और

समावेशी भारत" का निर्माण करना ही भारतीय संविधान के मुख्य निर्माता डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। नागपुर दौरे के दौरान पीएम मोदी ने दीक्षाभूमि पर डॉ. बी.आर अंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की, जहां अंबेडकर ने १९५६ में अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया था।

वे दीक्षाभूमि के स्तूप के अंदर गए और वहां रखी अंबेडकर की अस्थियों को श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम स्थल पर आगंतुकों की डायरी में हिंदी में लिखे अपने संदेश में मोदी ने कहा, "मैं अभिभूत हूं कि मुझे नागपुर में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के पांच 'पंचतीर्थ' में से एक दीक्षाभूमि पर जाने का अवसर मिला।"

पीएम मोदी ने बाबा साहब के प्रयासों का किया जिक्र

उन्होंने आगे लिखा, "यहां के पवित्र वातावरण में कोई भी बाबासाहेब के सामाजिक सद्भाव, समानता और न्याय के सिद्धांतों को महसूस कर सकता है।" उन्होंने आगे कहा कि दीक्षाभूमि लोगों को गरीबों, वंचितों और जरूरतमंदों के लिए समान अधिकारों और न्याय की व्यवस्था के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।"

पीएम मोदी ने नागपुर में सोलर डिफेंस एंड एरोस्पेस लिमिटेड के एम्यूनिशन मैन्यूफैक्चरिंग सेंटर का भी दौरा किया। यहां उन्होंने अनआर्म्ड एरियल व्हीकल्स (UAV) के लिए एक स्पेशल एयरस्ट्रिप का उद्घाटन किया।

इस मौके पर उन्होंने Nagastra-३ कामिकाज़े ड्रोन सिस्टम का भी निरीक्षण किया। यह ड्रोन १०० किमी की दूरी तक हमला करने और ५ घंटे तक उड़ान भरने में सक्षम है।

पीएम मोदी ने कहा, "मुझे पूरा विश्वास है कि इस अमृत कालखंड में हम बाबासाहेब अंबेडकर के मूल्यों और शिक्षाओं के साथ देश को प्रगति की नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। एक विकसित और समावेशी भारत का निर्माण ही बाबासाहेब को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।" पीएम मोदी ने आखिरी बार २०१७ में दीक्षाभूमि का दौरा किया था।"

इससे पहले जुलाई २०१३ में वह लोकसभा चुनाव के सिलसिले में हुई बैठक में शामिल होने नागपुर आए थे। प्रधानमंत्री ने संघ के माधव नेत्रालय के एक्सटेंशन बिल्डिग की आधारशिला रखी।

प्रधानमंत्री मोदी ने ३४ मिनट की स्पीच में देश के इतिहास, भक्ति आंदोलन, इसमें संतों की भूमिका, संघ की नि:स्वार्थ कार्य प्रणाली, देश के विकास, युवाओं में धर्म-संस्कृति, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, शिक्षा, भाषा और प्रयागराज महाकुंभ की चर्चा की।

उन्होंने संघ की तारीफ करते हुए कहा- राष्ट्रीय चेतना के लिए जो विचार १०० साल पहले संघ के रूप में बोया गया, वो आज महान वट वृक्ष के रूप में दुनिया के सामने हैं। ये आज भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को लगातार ऊर्जावान बना रहा है। स्वयंसेवक के लिए सेवा ही जीवन है। हम देव से देश, राम से राष्ट्र का मंत्र लेकर चल रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की ३४ मिनट की स्पीच में...

भारत की आजादी

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत के इतिहास में नजर डालें तो इसमें कई आक्रमण हुए। इतने आक्रमणों के बावजूद भी भारत की चेतना कभी समाप्त नहीं हुई, उसकी लौ जलती रही। कठिन से कठिन दौर में भी इस चेतना को जाग्रत रखने के लिए नए सामाजिक आंदोलन होते रहे। भक्ति आंदोलन इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

मध्यकाल के उस कठिन कालखंड में हमारे संतों ने भक्ति के विचारों से राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। गुरु नानक देव, कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, संत तुकाराम, संत रामदेव, संत ज्ञानेश्वर जैसे महान संतों ने अपने मौलिक विचारों से समाज में प्राण फूंके। उन्होंने भेदभाव के बंधनों को तोड़कर समाज को एकता के सूत्र में बांधा।

संघ की तारीफ

स्वामी विवेकानंद से लेकर डॉक्टर साहब तक, किसी ने भी राष्ट्रीय चेतना को बुझने नहीं दिया। राष्ट्रीय चेतना के जिस विचार का बीज १०० वर्ष पहले बोया गया था, वह आज एक महान वटवृक्ष के रूप में खड़ा है। सिद्धांत और आदर्श इस वटवृक्ष को ऊंचाई देते हैं, जबकि लाखों-करोड़ों स्वयंसेवक इसकी टहनियों के रूप में कार्य कर रहे हैं। संघ भारत की अमर संस्कृति का आधुनिक अक्षय वट है, जो निरंतर भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को ऊर्जा प्रदान कर रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारा शरीर परोपकार और सेवा के लिए ही है। जब सेवा संस्कार बन जाती है, तो साधना बन जाती है।

(पृष्ठ २ पर)

वक्फ विधेयक पर संसद की मुहर, दोनों सदनों में आसानी से हुआ पास

कानून बनने से अब एक कदम दूर

- मुस्लिमों के अधिकार नहीं छीनेगा वक्फ बिल : रिजीजू
- लोकसभा के बाद राज्यसभा ने भी दी मंजूरी, पक्ष में १२८ और विपक्ष में ९५ वोट पड़े
- लोकसभा में विधेयक पारित होने के बाद राज्यसभा में पस्त दिखा विपक्ष का हौसला
- रिजीजू ने कहा-वक्फ विधेयक से मुसलमानों को डरा रही हैं विपक्षी पार्टियां

नई दिल्ली : वक्फ विधेयक पर संसद ने अपनी मुहर लगा दी है। लोकसभा के बाद राज्यसभा में भी गुरुवार को १२ घंटे से अधिक चली मैराथन बहस के बाद इसे पारित कर दिया गया। विधेयक के समर्थन में १२८ और विरोध में ९५ वोट पड़े।

विधेयक पर विपक्ष की ओर से कई संशोधन पेश किए गए

विधेयक पर विपक्ष की ओर से कई संशोधन पेश किए गए, जिसे सदन ने खारिज कर दिया। दोनों सदनों से पारित होने के बाद इसे तुरंत ही राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। उनकी मंजूरी मिलते ही यह विधेयक कानून का रूप ले लेगा। विधेयक पारित करने के लिए लोकसभा की तरह राज्यसभा में भी आधी रात के बाद तक कार्यवाही चली।

राज्यसभा में वक्फ (संशोधन) विधेयक, २०२५ पर चर्चा का जवाब देते हुए अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजीजू ने कहा कि वक्फ बोर्ड एक वैधानिक निकाय है और इसे धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए। फिर भी हमने इसमें गैर-मुस्लिमों की संख्या सीमित कर दी है। वक्फ विधेयक से मुसलमानों को हम नहीं डरा रहे, बल्कि विपक्षी पार्टियां डरा रही हैं।

उन्होंने पूछा कि मुसलमानों में गरीबी ज्यादा है, तो उन्हें गरीब किसने बनाया? आपने बनाया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जो सबका साथ, सबका विकास की बात की है, वही तो संविधान की भावना है। वक्फ बोर्ड असंवैधानिक नहीं है।

राज्यसभा में विधेयक को लेकर वैसे तो भारी हंगामा और विपक्ष के कड़े विरोध की उम्मीद

थी, लेकिन लोकसभा में विधेयक पारित होने और सरकार की ओर से विधेयक को मुस्लिमों के हित में होने को लेकर जिस तरह के तर्क दिए गए, उससे शायद विपक्ष के हौसले थोड़े पस्त थे। यही वजह थी कि सदन में विधेयक पेश होने के दौरान विपक्ष ने किसी तरह की टोकाटाकी या शोरशराबे से भी परहेज किया।

चर्चा के दौरान विपक्ष की अधिकांश सीटें खाली दिखीं

इतना ही नहीं, विधेयक पर चर्चा के दौरान विपक्ष की अधिकांश सीटें खाली दिखीं, जबकि सत्ता पक्ष की सीटें खचाखच भरी हुई थीं। इस दौरान लोकसभा की तरह राज्यसभा में भी सरकार की ओर से गृह मंत्री अमित शाह मोर्चा संभाले दिखे।

चर्चा के दौरान उन्होंने कई बार खड़े होकर न सिर्फ हस्तक्षेप किया, बल्कि विपक्ष को आईना भी दिखाया। ट्रिब्यूनल पर बोल रहे कांग्रेस सांसद नासिर हुसैन को उन्होंने बीच में टोका और कहा कि अब तक ट्रिब्यूनल के फैसले को चुनौती नहीं दी जा सकती थी। नए विधेयक में हम इसे लेकर आए हैं।

जेपी नड्डा ने विपक्ष पर बोला हमला

भाजपा अध्यक्ष और सदन के नेता जेपी नड्डा ने कहा कि कांग्रेस ने अपने शासनकाल में मुस्लिम महिलाओं को दोयम दर्जे की नागरिक बना दिया था। मिस्त्र, सूडान, बांग्लादेश और सीरिया जैसे मुस्लिम देशों में कई साल पहले तत्काल तीन तलाक पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, लेकिन कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार ने एक दशक तक सत्ता में रहने के दौरान मुस्लिम महिलाओं के लिए कुछ नहीं किया। इससे पहले राज्यसभा में विधेयक पेश करते हुए रिजीजू ने विपक्ष के उन आरोपों को

वक्फ बोर्डों पर मनमाने व्यवहार का आरोप

रिजीजू ने वक्फ बोर्डों पर मनमाने व्यवहार का आरोप लगाया और कहा कि दिल्ली के भीतर मौजूद शहरी विकास मंत्रालय व दिल्ली विकास प्राधिकरण की १२३ संपत्तियों पर वक्फ अपना दावा कर रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कल वक्फ संसद भवन पर भी दावा पेश कर दे। उन्होंने केरल और तमिलनाडु के कुछ और उदाहरण भी गिनाए।

खारिज कर दिया कि मुस्लिमों के अधिकार छीने जा रहे हैं।

रिजीजू ने विधेयक की खूबियां गिनाईं

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस कानून का उद्देश्य मुस्लिम महिलाओं को सशक्त बनाना और सभी मुस्लिम समुदाय के अधिकारों की रक्षा करना है। कहा कि यह विधेयक मुस्लिमों के खिलाफ बिल्कुल नहीं है, बल्कि उनका उत्थान करने वाला है। रिजीजू ने जहां विधेयक की खूबियां गिनाईं, वहीं विपक्ष की ओर से फैलाए जा रहे दुष्प्रचार का भी जवाब दिया।

यह विधेयक गरीब व पिछड़े मुस्लिमों के लिए

कहा कि यह विधेयक गरीब व पिछड़े मुस्लिमों और उनके परिवारों के विकास का रास्ता खोलने वाला है। इसलिए इसका नाम उम्मीद रखा गया है। उन्होंने उम्मीद (यूनीफाइड वक्फ मैनेजमेंट इम्पावरमेंट, इफिशिएंसी एंड डेवलपमेंट) का पूरा नाम भी पढ़कर बताया। कहा कि वैसे भी जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश को विकसित बनाने की बात करते हैं, तो उससे मुस्लिम अलग नहीं हैं।

कश्मीर में आतंकियोंकी पर्यटकों पर गोलीबारी, २७ लागों की मौत

नाम पूछा, धर्म पूछा और मार डाला...

जम्मू : जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले के पहलगाम क्षेत्र में बीते दिन ३ बजे के आसपास लष्करी पोषाक में आए आतंकियों ने नाम और धर्म पूछकर अचानक कई पर्यटकों पर गोलीबारी की, जिसमें २७ लोगों की जान चली गई है। साथ ही अभी भी १७ लोग घायल बताए जा रहे हैं। घटना की सूचना मिलते ही सेना ने इलाके को चारों तरफ से घेर लिया और सर्च अभियान शुरू कर दिया। इसे लेकर दिल्ली, मुंबई और यूपी में टूरिस्ट प्लेस को लेकर हाई अलर्ट जारी किया गया है।

कश्मीर के पहलगाम शहर के पास 'मिनी स्विट्जरलैंड' के नाम से मशहूर पर्यटन स्थल बैसरन घाटी में मंगलवार को हुए आतंकवादी हमले में २६ लोगों की मौत हो गई। मृतकों में ज्यादातर पर्यटक थे। यह २०१९ में पुलवामा में हमले के बाद घाटी में हुआ सबसे बड़ा हमला है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सऊदी अरब का दौरा बीच में ही छोड़कर वापस लौट चुके हैं। उन्होंने एयरपोर्ट पर ही पहलगाम हमले को लेकर बैठक की। पीएम मोदी आज कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी यानि CCS की भी बैठक लेंगे। इस बीच आतंकी हमले में मरने वालों की फुल लिस्ट जारी की गई है। पहलगाम आतंकी हमले में २६ लोग मारे गए हैं जबकि १७ लोग घायल हैं। इनमें अलग-अलग राज्यों के लोग हैं। सबसे ज्यादा तादा महाराष्ट्र के पर्यटकों की है। मृतकों में एक कश्मीरी भी शामिल है।

पहलगाम आतंकी हमले में महाराष्ट्र के ६ पर्यटकों की मौत, कर्नाटक के ३ और गुजरात के ३ टूरिस्ट की मौत, पश्चिम बंगाल के २, यूपी के १ टूरिस्ट की मौत, बिहार, यूपी, JK, ओडिशा और एमपी के १-१ पर्यटक की मौत, नेपाल और UAE के १-१ नागरिक की मौत हुई है।

पुलिस सूत्रों की मानें तो हमले को अंजाम ४ आतंकियों ने दिया इनमें से दो आतंकियों की पहचान हो गई है। एक आतंकी आदिल गुरी है जिसकी फोटो भी सामने आई है। आदिल गुरी २०१८ में पाकिस्तान से वापस आया था। वहीं दूसरे आतंकी की पहचान आसिफ शेख के रूप में हुई है। इन दोनों के साथ दो और आतंकी हमले में शामिल थे। ये दोनों पाकिस्तानी है।

कई टूरिस्टों के पैंट उतरवाए

इस हमले की जिम्मेदारी लश्कर से जुड़े आतंकवादी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट TRF ने ली है। इन आतंकियों ने पहलगाम में जिस तरह की बर्बरता दिखाई है उससे पूरा देश गुस्से में है। आतंकियों ने पहले नाम पूछा, धर्म पूछा और फिर भी शक हुआ तो कन्फर्म करने के लिए आतंकियों ने कई टूरिस्टों के पैंट उतरवाए और कन्फर्म किया कि वो गैर मुस्लिम हैं या नहीं।

विशेष विमान से घर भेजे जाएंगे पार्थिव शरीर

पहलगाम में मारे गए पर्यटकों के पार्थिव शरीर उनके घरों को भिजवाने के इंतजाम किए जा रहे हैं। विशेष विमान से पार्थिव शरीर उनके घरों को भिजवाए जाएंगे। इस हमले से पूरा देश गुस्से में हैं। इस बीच हमलावरों की तलाश तेज हो गई है। आर्मी के साथ साथ CRPF और जम्मू-कश्मीर पुलिस भी सर्च ऑपरेशन में साथ है। आर्मी की विक्टर फोर्स के साथ साथ स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के जवान हमलावर आतंकियों की तलाश कर रहे हैं।

सर्च ऑपरेशन के बीच उरी में पाकिस्तान की ओर से हुई घुसपैठ की कोशिश, सेना ने २ आंतकियों को मार गिराया

पहलगाम हमले को लेकर आर्मी पूरे इलाके में छानबीन कर रही है। इसी बीच पाकिस्तान की ओर से बॉर्डर पर घुसपैठ की कोशिश की गई। हालांकि सेना ने पाकिस्तान के मंसूबों पर पानी फेर दिया। जानकारी के मुताबिक, उरी सेक्टर की ओर से कुछ आतंकियों ने घुसपैठ की कोशिश की, हालांकि सर्च ऑपरेशन कर रही सेना ने उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया और उनके नापाक मंसूबों पर पानी फेर दिया।

आतंकियों ने की घुसपैठ की कोशिश

मिली जानकारी के मुताबिक, सेना के जवान पहलगाम हमले को लेकर सर्च ऑपरेशन चला रहे हैं। इसी बीच बारामुल्ला के ओपी टिक्का में २३ अप्रैल २०२५ को लगभग २-३ आतंकवादियों ने बारामुल्ला के उरी नाला में सरजीवन के जनरल क्षेत्र से घुसपैठ करने की कोशिश की, हालांकि लाइन कंट्रोल पर सतर्क टीपीएस के जवानों ने उन्हें देखा और रुकने को कहा। फिर आतंकियों ने गोली चलानी शुरू कर दी। इसके सेना उन्हें वहीं रोक दिया, परिणामस्वरूप उनपर फायरिंग की। जानकारी के मुताबिक, अभी भी क्षेत्र में आतंकियों और सेना की बीच फायरिंग हो रही है।

२ को मार गिराया

एएनआई के मुताबिक, सेना ने बताया कि सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच भारी गोलीबारी में दो आतंकवादियों को मार गिराया गया है। सेना ने आतंकवादियों के पास से भारी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद और युद्ध जैसे अन्य सामान बरामद किए गए हैं, अभी ऑपरेशन जारी है।

उद्धव-राज ठाकरे के साथ आने की चर्चाओं के बीच क्या शरद और अजित पवार भी मिलाएंगे हाथ?

मुंबई : महाराष्ट्र में सियासी उथल-पुथल जारी है. एक तरफ उद्धव और राज ठाकरे के बीच सुलह की चर्चा है तो दूसरी ओर शरद पवार और अजित पवार के भी साथ आने की अटकलें अब तेज हो गई हैं. पिछले तीन सप्ताह में चाचा-भतीजे तीन बार मंच साझा कर चुके हैं और मंगलवार को पुणे के साखर संकुल में एक जनसभा के के बाद अजित पवार और शरद पवार के बीच प्राइवेट मीटिंग भी हुई है, जो करीब २० मिनट तक चली.

इसके बाद अजित पवार से जब पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हम काम के सिलसिले में मिलते-जुलते रहते हैं. इसमे कोई राजनीतिक चाल नहीं है. अजित पवार ने ऐसा कहकर बात टालने की कोशिश की. लेकिन शरद पवार ने इस पूरे मामले पर कुछ भी कहने से इनकार कर दिया. इन दोनों नेताओं के बीच लगातार हो रहीं मुलाकातें और बातचीत से इनके एक बार फिर साथ आने की चर्चाओं ने जोर पकड़ लिया है.

कब-कब हुई मुलाकात

हाल के दिनों में शरद पवार और अजित पवार की पहली मुलाकात ४ अप्रैल को हुई. यह मुलाकात वसंतदादा शुगर इंस्टीट्यूट में हुई. इस कार्यक्रम में गन्ने के उत्पादन में एआई (Artificial intelligence) का किस तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है, इस पर एक प्रेजेंटेशन भी हुआ था. इसके बाद एआई और गन्ना प्रोडक्शन को लेकर एक मीटिंग और प्रेजेंटेशन आज भी होना था. इस पूरे कार्यक्रम की जिम्मेदारी शरद पवार के भाई प्रतापराव पवार पर दी गई थी.

चाचा-भतीजे के बीच दूसरी मुलाकात १२ अप्रैल को हुई. यह मुलाकात सातारा में हुई, जहां पर रयत शिक्षण संस्था का वार्षिक सम्मेलन था. खास बात यह है कि १२ अप्रैल को अमित शाह भी पुणे में मौजूद थे. लेकिन अजित पवार उनका कार्यक्रम छोड़कर अपने चाचा शरद पवार के साथ रयत शिक्षण संस्था के वार्षिक सम्मेलन में शामिल हुए. इस मंच पर जब बैलेंसशीट पढ़ते वक्त गलती हुई तब अजित पवार की मदद के लिए शरद पवार सामने आए थे.

तीसरी मुलाकात आज साखर संकुल में हुई. इसके बाद अजित पवार और शरद पवार की एक कमरे में निजी मीटिंग भी हुई. इस दौरान सिर्फ चाचा-भतीजे की मौजदूगी थी. लेकिन इस बैठक में क्या बातचीत हुई, इसे लेकर अब तक कोई भी जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है.

सुप्रिया सुले ने क्या कहा?

चाचा-भतीजे की मुलाकात पर शरद पवार की बेटी और एनसीपी सांसद सुप्रिया सुले ने कहा कि जब पार्टी नहीं टूटी थी, तब भी मैं पार्टी में नीचे के पायदान पर ही थी. शरद पवार, प्रफुल्ल पटेल, अजित पवार, छगन भुजबल, जयंत पाटिल जैसे नेता मेरे सीनियर ही थे. इसलिए यह मेरी प्रॉब्लम नहीं है. दरअसल, सुप्रिया से पूछा गया था कि चाचा-भतीजे के बीच क्या उनकी वजह से बात नहीं बन पा रही है, क्योंकि अजित पवार के साथ होने से पार्टी में उनका कद छोटा हो सकता है. भविष्य में शरद पवार और अजित पवार के साथ होने को लेकर सुप्रिया सुले ने कहा कि दोनों लोग जो भी फैसला लेंगे, वह मंजूर होगा.

आरएसएस अमर संस्कृति का वट वृक्ष : नरेंद्र मोदी

(पृष्ठ १ से)

यही साधना हर स्वयंसेवक की प्राणवायु होती है। यह सेवा संस्कार, यह साधना, यह प्राणवायु, पीढ़ी दर पीढ़ी हर स्वयंसेवक को तप और तपस्या के लिए प्रेरित करती है। उसे न थकने देती है और न ही रुकने देती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत की सबसे बड़ी पूंजी हमारा युवा है। देश का युवा आत्मविश्वास से भरा हुआ है। उसकी रिस्क-टेकिंग कैपेसिटी पहले से कई गुना बढ़ चुकी है। वह इनोवेशन कर रहा है, स्टार्टअप की दुनिया में परचम लहरा रहा है। अपनी विरासत और संस्कृति पर गर्व करते हुए आगे बढ़ रहा है।

महाकुंभ में हमने देखा कि लाखों-करोड़ों की संख्या में युवा पीढ़ी पहुंची और सनातन परंपरा से जुड़कर गौरव से भर उठी। भारत का युवा आज देश की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए काम कर रहा है। यही युवा २०४७ के विकसित भारत की ध्वजा थामे हुए हैं। मुझे भरोसा है कि संगठन, समर्पण और सेवा की त्रिवेणी विकसित भारत की यात्रा को ऊर्जा और दिशा देती रहेगी।

भारत अब मदद करने का केंद्र है

प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी स्पीच में कहा कि 'वसुधैव कुटुंबकम' का मंत्र आज विश्व के कोने-कोने में गूंज रहा है। जब कोविड जैसी महामारी आती है, तो भारत विश्व को परिवार मानकर वैक्सीन उपलब्ध कराता है। दुनिया में कहीं भी प्राकृतिक आपदा हो, भारत सेवा के लिए तत्पर रहता है।

म्यांमार में भूकंप आया तो भारत ऑपरेशन ब्रह्मा के तहत तुरंत मदद के लिए पहुंच गया। नेपाल में भूकंप हो, मालदीव में जल संकट हो, भारत ने सहायता देने में क्षणभर की भी देर नहीं की। युद्ध के हालात में भी भारत दूसरे देशों के नागरिकों को सुरक्षित निकालकर लाता है। भारत अब ग्लोबल साउथ की आवाज भी बन रहा है। विश्व में बंधुत्व और सेवा की यह भावना हमारे संस्कारों का ही विस्तार है।

हेल्थ सेक्टर की प्रगति

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि देश के सभी नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देना हमारी प्राथमिकता है। गरीब से गरीब व्यक्ति को भी बेहतरीन इलाज मिले, कोई भी देशवासी जीवन जीने की गरिमा से वंचित न रहे। जो बुजुर्ग अपना पूरा जीवन देश के लिए समर्पित कर चुके हैं, उन्हें इलाज की चिंता न सताए, ऐसी परिस्थितियों में उन्हें न जीना पड़े। यही सरकार की नीति है।

इसीलिए आयुष्मान भारत योजना के तहत करोड़ों लोगों को मुफ्त इलाज की सुविधा मिल रही है। हजारों जनऔषधि केंद्र गरीबों और मध्यम वर्गीय परिवारों को सस्ती दवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। करीब एक हजार डायलिसिस सेंटर मुफ्त में डायलिसिस सेवा प्रदान कर रहे हैं, जिससे देशवासियों के हजारों करोड़ रुपये बच रहे हैं।

पायलटों के लिए डिजिटल लाइसेंस

नई दिल्ली : केंद्रीय नागर विमानन मंत्री श्री राम मोहन नायडू ने पायलटों के लिए कार्मिक लाइसेंस (ईपीएल) का शुभारंभ किया, जो भारत के नागर विमानन क्षेत्र की सलामती, सुरक्षा और दक्षता को आधुनिक बनाने और बेहतर बनाने के लिए एक अभूतपूर्व पहल है। इस प्रगति के साथ भारत अंतर्राष्ट्रीय नागरिक विमानन संगठन से अनुमोदन के बाद इस उन्नत प्रणाली को लागू करने वाला का दूसरा देश बन गया है।

ईपीएल एक कार्मिक लाइसेंस का डिजिटल संस्करण है, जो पायलटों के लिए पारंपरिक भौतिक लाइसेंस की जगह लेगा। यह ईजीसीए मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से सुरक्षित रूप से सुलभ होगा, जो केंद्र सरकार की व्यापार करने में सुगमता और डिजिटल इंडिया पहलों के संरेखण में एक सहज और पारदर्शी प्रक्रिया सुनिश्चित करेगा।

ईपीएल की शुरूआत आईसीएओ के अनुलग्नक १ - कार्मिक लाइसेंसग में संशोधन १७८ के बाद हुई है, जो सदस्य देशों को बेहतर सुरक्षा और दक्षता के लिए इलेक्ट्रॉनिक लाइसेंस अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। जबकि प्रमुख वैश्विक विमानन नेतृत्वकर्ता भी इसी तरह की प्रणालियों को लागू करने की प्रक्रिया में हैं, भारत सफलतापूर्वक डिजिटल विमानन समाधानों में सबसे आगे निकल गया है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा, भारत के विमानन क्षेत्र की अभूतपूर्व वृद्धि के साथ हमें निकट भविष्य में लगभग २०,००० पायलटों की आवश्यकता होगी। पायलट नागर विमानन आधार हैं और ईजीसीए और ईपीएल के साथ हम वैश्विक स्तर पर उनके आराम और रोजगार क्षमता को बढ़ाने के लिए अभिनव, प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों का लाभ उठा रहे हैं, साथ ही सुरक्षा संचालन का समर्थन करने के लिए उनके क्रेडेंशियल्स तक वास्तविक समय में पहुँच प्रदान कर रहे हैं।

लागू करने से पहले, डीजीसीए पायलटों को स्मार्ट कार्ड प्रारूप में लाइसेंस जारी कर रहा था और अब तक ६२००० कार्ड लाइसेंस जारी कर चुका है। वर्ष २०२४ में जारी किए जाने वाले कुल लाइसेंसों में मुद्रित कार्ड की आवश्यकता लगभग २०,००० थी, जो प्रति माह औसतन १,६६७ कार्ड ईपीएल के शुभारंभ के साथ, मुद्रित कार्डों की जरूरत चरणबद्ध तरीके से कम हो जाएगी, जिससे लाइसेंसग प्रक्रिया काफी हद तक सुव्यवस्थित हो जाएगी। इसके अलावा, इस बदलाव का कागज और प्लास्टिक के उपयोग को कम करके पर्यावरणीय स्थिरता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

मंत्री महोदय ने डिजिटल नवाचार के भारतीय विमानन को नया आकार देने और परिचालन को अधिक कुशल बनाने के लिए अन्य परिवर्तनकारी पहलों पर भी रोशनी डाली। प्रमुख प्रगति में सुव्यवस्थित लाइसेंसग के लिए ईजीसीए प्लेटफॉर्म, ड्रोन के लिए डिजिटल स्काई प्लेटफॉर्म और एयरलाइन परिचालन के लिए इलेक्ट्रॉनिक फ्लाइट फोल्डर (ईएफएफ) शामिल हैं। पायलटों के इलेक्ट्रॉनिक कार्मिक लाइसेंस (ईपीएल) की शुरुआत वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त विनियामक ढांचे की स्थापना में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

'मैं गुस्से में मर्यादा भूल गया', आपत्तिजनक जातिगत टिप्पणी के बाद अनुराग कश्यप का माफीनामा

मुंबई : फिल्म निर्माता-निर्देशन अनुराग कश्यप ने बीते दिनों एक जाति समुदाय पर आपत्तिजनक टिप्पणी की। उनकी इस टिप्पणी पर जमकर विवाद हो रहा है और अनुराग कश्यप की आलोचना हो रही है। अनुराग कश्यप को भी अब अपनी गलती का एहसास हो गया है, जिसके बाद उन्होंने माफी मांगी है। अनुराग कश्यप ने आज मंगलवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा कर लिखा है, 'मैं गुस्से में मर्यादा भूल गया'।

अनुराग कश्यप ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट शेयर किया है। इसमें उन्होंने लिखा है, 'मैं गुस्से में किसी को एक जवाब देने में अपनी मर्यादा भूल गया। और पूरे ब्राह्मण समाज को बुरा बोल डाला। वो समाज, जिसके तमाम लोग मेरी जिंदगी में रहे हैं, आज भी हैं और बहुत योगदान करते हैं। आज वो सब मुझसे आहत हैं। मेरा परिवार मुझसे आहत है। बहुत सारे बुद्धिजीवी, जिनकी मैं इज्जत करता हूं मेरे उस गुस्से में, मेरे बोलने के तरीके से आहत हैं। मैंने खुद ही ऐसी बात करके, अपनी ही बात को मुद्दे से भटका दिया'।

अनुराग कश्यप ने आगे लिखा है, 'मैं तहे दिल से माफी मांगता हूं, इस समाज से जिनको मैं ये नहीं कहना चाह रहा था, लेकिन आवेश में किसी की घटिया टिप्पणी का जवाब देते हुए लिख दिया। मैं माफी मांगता हूं अपने उन तमाम सहयोगी दोस्तों से, अपने परिवार से और उस समाज से, अपने बोलने के तरीके के लिए, अभद्र भाषा के लिए। अब आगे से ऐसा न हो, मैं उस पर काम करूंगा। अपने गुस्से पर काम करूंगा। मुद्दे की बात अगर करनी हो तो सही शब्दों का इस्तेमाल करूंगा। आशा है आप मुझे माफ कर देंगे'।

अनुराग कश्यप के इस पोस्ट पर यूजर्स की प्रतिक्रिया आ रही हैं। नेटिजन्स उनके माफी मांगने के फैसले की तारीफ कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'आत्मनिरीक्षण'। एक अन्य यूजर ने लिखा, 'ऐसे माफी मांगना आपका बड़प्पन है'। एक यूजर ने लिखा, 'गलती मान लेना और उसे सबके मान लेना बड़ी बात है'। हालांकि, कुछ यूजर अनुराग को ट्रोल भी कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'अपने निजी फ्रस्टेशन को सोशल मीडिया पर निकालने से बचें। एक तराजू में सबको ना तौलें'।

देश में प्रयोगशालाओं का नेटवर्क

नई दिल्ली : स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) नेकेंद्रीय क्षेत्र की योजना महामारी और राष्ट्रीय आपदाओं के प्रबंधन केलिए प्रयोगशालाओं के एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क की स्थापना के अंतर्गतवायरस अनुसंधान और निदान प्रयोगशाला (वीआरडीएल) का एक नेटवर्क स्थापित किया है। इस योजना तहत, ११ बीएसएल-३ स्तर की प्रयोगशालाओं और १५४ जैव सुरक्षा स्तर २ (बीएसएल-२) प्रयोगशालाओं सहित १६५ जैव सुरक्षा प्रयोगशालाओं को मंजूरी दी गई है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के विभिन्न संस्थानों में २१ अन्य जैव सुरक्षा प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं, जोबीएसएल -४ (१), बीएसएल -३ (८) औरबीएसएल (१२) जैसे विभिन्न स्तर की जैव सुरक्षा से सुसज्जित हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, अनुसंधानराष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एएनआरएफ) ने उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रोंमें अनुसंधान की गहनता (आईआरएचपीए) कार्यक्रम के अंतर्गत ५ बीएसएल/एबीएसएल-३ प्रयोगशालाओं को भी वित्त पोषित किया है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग से प्राप्त इनपुट के आधार पर, डीबीटी के विभिन्न संस्थानों में २६ जैव-सुरक्षा प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अनुसार, आईसीएआर के विभिन्न संस्थानों में ९ जैव-सुरक्षा प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, के विभिन्न संस्थानों में ११ जैव-सुरक्षा प्रयोगशालाएँ स्थापित की गई हैं।

रसोई पर बाजार के हमले से चौपट होता स्वास्थ्य

आज रसोई पर संकट मंडरा रहा है, बाजारवाद ने रसोई के अस्तित्व को ही बदल दिया है, न केवल रेसाई को बदला है बल्कि हमारे एवं स्वास्थ्यवर्द्धक खानपान को ही ध्वस्त कर दिया है, जिससे हमारा स्वास्थ्य तो चौपट हो ही रहा है, हमारे पारिवारिक एवं भावनात्मक संबंध भी चरमरा रहे हैं। देश-दुनिया में पैकेटबंद खाद्य पदार्थों का चलन और इससे होने वाले नुकसान बढ़ते जा रहे हैं। मोटापा सहित अनेक बीमारियां संकट पैदा रही है। इन्हीं चिन्ताओं के बीच यूनिसेफ की एक ताजा रिपोर्ट चौंकाती भी है एवं लगातार स्वास्थ्य समस्याओं के बढ़ने के कारण को दर्शाती है।

यूनिसेफ ने भारत समेत ९७ देशों में अध्ययन कर बताया है कि पिछले १५ साल में दुनियाभर में पैकेटबंद खाद्य पदार्थों की बिक्री ११ बढ़ी है, जिससे जेब पर भी असर पड़ा है और स्वास्थ्य पर भी, विशेषतः पारिवारिक संरचना पर। ज्यादा-से-ज्यादा चेन स्टोर-सुपरमार्केट खुलने के बाद लोग इनका अधिक सेवन कर रहे हैं। जिन देशों में प्रतिव्यक्ति सर्वाधिक चेन किराना स्टोर एवं सुपरमार्केट हैं, वहां लोग ज्यादा अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थ खरीदते हैं। फूड' पत्रिका में प्रकाशित इस रिपोर्ट को गंभीरता से लेते हुए व्यक्ति, परिवार, समाज एवं सरकार को सख्त एवं प्रभावी कदम उठाने होंगे।

अध्ययन के मुताबिक, जिन देशों में पिछले १५ साल में सुपरमार्केट से तले-भुने एवं जंक खाद्य पदार्थों की बिक्री में ११ फीसदी वृद्धि हुई है, वे बांग्लादेश, अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, सगापुर जैसे देश हैं। रिपोर्ट का एक चतनीय पक्ष यह है कि दक्षिण एशिया में यह बढ़ोतरी अन्य देशों की तुलना में तेज रही। आंकड़े बताते हैं कि बीते डेढ़ दशक में विश्व स्तर पर सुपरमार्केट २३.६ फीसदी बढ़े हैं, जबकि इस दौरान दुनियाभर मोटापा १८.२ प्रतिशत से बढ़ कर २३.७ प्रतिशत हो गया है। पैकेटबंद खाद्य पदार्थों की खरीद बढ़ने से अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात में भोजन पर खर्च बहुत अधिक बढ़ा है। भारत में भी पिछले साल के अंत में सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी घरेलू उपभोग व्यय की रिपोर्ट कहती है कि लोगों के खाद्य बजट में सब्जियों, पैकेटबंद चीजों एवं जंक फूड्स की ही बड़ी हिस्सेदारी है। खाद्य पदार्थों के व्यापार पर नजर रखने वाली एजेंसी यूरोमॉनिटर के मुताबिक, भारत में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड की प्रतिव्यक्ति सालाना बिक्री २००५ में दो किलोग्राम थी, जो २०१९ छह किलोग्राम और २०२४ में आठ किलोग्राम हो गयी।

सीएसइ (सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायर्नमेंट) द्वारा भारत में किये गये अध्ययन से भी इसका खुलासा हुआ है कि जंक फूड और पैकेटबंद भोजन मोटापा, कैंसर, उच्च रक्तचाप, मधुमेह और दिल की बीमारियां बढ़ा रहे हैं। यह कितना बड़ा मुद्दा इसे इसी से समझा जा सकता है कि इस बार बजट से पहले की आर्थिक समीक्षा में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड पर अधिक टैक्स लगाने की सिफारिश की गयी थी। जाहिर है, अगर अभी नहीं

संभले, तो बहुत देर हो जायेगी। इंसानों की तोंद बढ़ती जा रही है।

इस बढ़ते की भयावहता को महसूस करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मोटापे के खिलाफ जंग छेड़ी है। एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए प्रधानंत्री ने कहा कि २०५० तक ४४ करोड़ भारतीय मोटापे का शिकार होंगे। प्रधानमंत्री ने इन आंकड़ों को खतरनाक बताते हुए मोटापे को मात देने के लिए को मंत्र भी दिये हैं। ये मंत्र हैं- खाने वाले तेल में लोग १० फीसदी की कटौती एवं जीवनशैली में बदलाव करें। अगर समय पर इस पर ध्यान नहीं गया तो भविष्य में बड़ी स्वास्थ्य समस्याएं होंगी। मोटापे की वजह से हर तीसरा व्यक्ति गंभीर बीमारियों का शिकार हो है।

स्वाद में चटपटी और जब जरूरत हो, तब पैकेटबंद भोजन की उपलब्धता ने हमें अपने घर की रसोई की जगह बाजार पर निर्भर बना दिया है।इसके लिए बाजार ने कई तरह के लुभावने एवं बाजारवादी तर्क और नारे गढ़ रखे हैं। ये नारे और तर्क हमें लुभाते एवं बनाते हैं। समय की बचत के नाम पर हमें मजबूर करते हैं कि हम अपने घर की रसोई को बंद ही रखें। हमारे खान-पान की परंपरा और पौष्टिकता पर यह एक तरह से हमला है। बाजार हमें सिखाना चाहता है कि परिवार में जब जिसको भूख लगे, वह बाजार आनलाइन ऑर्डर करें औरखा ले। पहले परिवार के लोग एक साथ बैठकरखाते थे, तब परिवार का हर सदस्य एक दूसरे के सुख-दुख से परिचित होता एवं संवेदनाओं से जुड़ता था। दुख, परेशानियों, निराशाओं को दूर करने का सामूहिक प्रयास किया जाता था। सलाह मशविरा किए जाते थे। आज हमें सामूहिकता से काटकर वैयक्तिक एवं एकांगी बना रहा है। यदि हमने अपनी रसोई को सहेजकर नहीं रखा, तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है, जब हमें पूरी तरह बाजार के डिब्बाबंद भोजन पर ही निर्भर रहना पड़े।

विशेषज्ञों का कहना है कि करीब १४ फीसदी वयस्क और १२ बच्चे अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड्स की लत का शिकार बन चुके हैं। लोगों में स्वास्थ्य के नजरिए से हानिकारक इन खाद्य पदार्थों को लेकर जो लगाव है, वो शराब और तम्बाकू जितना ही बढ़ चुका है। बता दें कि दुनिया भर में १४ फीसदी लोग शराब के और १८ फीसदी लोग के आदी बन चुके हैं। ऐसे में १४ फीसदी वयस्कों में अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड की दीवानगी एवं आकर्षण बेहद गंभीर खतरे की ओर इशारा करती है। यह जानकारी अमेरिका, ब्राजील और स्पेन के शोधकर्ताओं द्वारा किए अध्ययन में सामने आई है, जिसके नतीजे नौ अक्टूबर २०२३ को द ब्रिटिश मेडिकल में प्रकाशित हुए हैं। यह अध्ययन ३६ देशों में प्रकाशित २८१ अध्ययनों के विलेषण पर आधारित है।

आजकल मार्केट में पैकेटबंद एवं जंक फूड्स की भरमार है। चिप्स से लेकर दूध, मसाले और हर एक चीज प्लास्टिक, एल्युमिनियम या पेपर की पैकग के साथ आ रही है। सुविधा के पर हो रहा यह हमला कई सारे साइड इफेक्ट्स दे रहा हैं। न सिर्फ बड़े बल्कि बच्चे भी पैकेटबंद चिप्स, जूस, कुकीज और नमकीन, नूडल्स का इस्तेमाल कर रहे हैं।

किसी भी तरह की खाने-पीने की चीज की अगर पैकेजग की जाती है तो उन्हें सुरक्षित, संरक्षित और ज्यादा तक चलने के लिए तीन चीजें मिलायी जाती हैं। प्रीजर्वेटिव्स, नकली रंग और एक्स्ट्रा फैट। कुछ समय पहले आई एक स्टडी में बताया गया कि पैकेटबंद फूड्स में इमल्सीफायर नाम का एक कंपाउंड पाया जाता है, जो दिल की सेहत यानी हार्ट हेल्थ के लिए खतरनाक होता है, इससे बीमारियां हो सकती हैं, यह कंपाउंड ब्लड प्रेशर लेवल को बढ़ा सकती है। बहुत ज्यादा मात्रा में इमल्सीफायर जब शरीर में पहुंचता है तो इससे शरीर की शक्ति क्षीण होने लगती है और कमजोरी-थकान-सुस्ती बढ़ती है।

पैकेटबंद भोजन में घर के बने भोजन की तुलना में पोषक तत्वों की होती है। पैकेटबंद भोजन अक्सर अतिरिक्त चीनी, नमक और वसा से भरपूर होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। इनमें फाइबर की कमी होती है, जिससे पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। पैकेटबंद खाद्य पदार्थों में मिलावट की संभावना अधिक होती है, इनमें स्नेह, प्यार, अपनापन एवं नहीं होने से यह पोषित नहीं होते। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि पैकेटबंद भोजन में पाए जाने वाले कुछ रसायन कैंसर का खतरा बढ़ा सकते हैं। बच्चों में पैकेटबंद भोजन का अधिक सेवन उनके शारीरिक विकास को प्रभावित कर सकता है।

प्राचीनकाल से ही हमारे देश में का चूल्हा यानी रसोई जहां स्वास्थ्य की प्रयोगशाला होती थी वही पूरे परिवार को जोड़ने का केंद्र रही है। यह रसोई ही थी जिसने परिवार को हर सदस्य से प्रेम करना सिखाया। एक दूसरे की इज्जत, सुरक्षा, देखभाल एवं स्वस्थ रहना सिखाया। संयुक्त परिवार के दिनों में सास-बहू, देवरानी-जेठानी, के बीच पनपे मतभेद को मनभेद में बदलने से रोका,भोजन बनाते या साथ बैठकर खाते समय सारे मतभेद, गुस्से को तिरोहित करना भी रसोई ने ही सिखाया। यही हाल पुरुषों का भी था। जब साथ बैठकर खाते थे, तो आपसी मतभेद, मनमुटाव हवा हो जाते थे। लेकिन आज उसी पर संकट मंडरा रहा है।

नक्सलवाद के अंत का आरंभ

छत्तीसगढ़ में हाल ही में हुई मुठभेड़, जिसमें सुरक्षा बलों ने करीब १८ नक्सलियों को मार गिराया, वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ भारत की लंबी लड़ाई में एक महत्वपूर्ण घटना है। यह दशकों पुराने उग्रवाद को बेअसर करने में राज्य की बढ़ती सफलता का एक और संकेत है, जो एक बड़ी आंतरिक सुरक्षा चुनौती रही है। नक्सली आंदोलन की शुरुआत १९६७ में पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गाँव नक्सलबाड़ी में हुई थी। उस वक्त कथित किसान विद्रोह ने भारत में एक कट्टरपंथी वामपंथी विद्रोह की नींव रखी। माओवादी विचारधारा से प्रेरित इस आंदोलन का उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से राज्य को उखाड़ फेंकना था, जो हाशिए पर पड़े और आदिवासी आबादी से समर्थन प्राप्त करता था, जो प्रणालीगत शोषण, भूमि विस्थापन और सामाजिक-आर्थिक असमानता से निराश थे। दशकों के दौरान, यह आंदोलन कई राज्यों में फैल गया, जिससे पश्चिम बंगाल, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, महाराष्ट और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों को मिलाकर 'रेड कॉरिडोर' के रूप में जाना जाने लगा। नक्सली विद्रोह ने गहरी जड़ें जमाए सामाजिक शिकायतों का फायदा उठाया, अक्सर दूरदराज के इलाकों में शासन की कमी को पूरा किया, जहां शासन व्यवस्था की उपस्थिति कमज़ोर थी। १९७० के दशक में छिटपुट विद्रोहों से, नक्सली आंदोलन १९९० और २००० के दशक तक एक संगठित विद्रोह में बदल गया। कई सालों तक, नक्सली गुरिल्ला युद्ध में लगे रहे, सुरक्षा बलों पर घात लगाकर हमला करते रहे, बुनियादी ढाँचे की परियोजनाओं पर हमला करते रहे और राजनीतिक नेताओं को निशाना बनाते रहे। २०१९ में भारत के गृह मंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के बाद से श्री. अमित शाह ने नक्सलवाद को खत्म करने के लिए अटूट प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। उनके नेतृत्व में, सरकार ने एक बहुआयामी रणनीति लागू की है जो सुरक्षा अभियानों को विकासात्मक पहलों के साथ जोड़ती है। सरकार ने ग्रेहाउंड्स, कोबरा (कमांडो बटालियन फॉर रेसोल्यूट एक्शन) और बस्तरिया बटालियन जैसे विशेष बलों को तैनात किया है, जो जंगल युद्ध में माहिर हैं। राज्य पुलिस और केंद्रीय बलों के बीच बेहतर समन्वय ने सटीकता-आधारित आतंकवाद विरोधी अभियानों को जन्म दिया है। यह मानते हुए कि अकेले सैन्य कार्रवाई संकट को हल नहीं कर सकती है, सरकार ने प्रभावित क्षेत्रों के विकास पर जोर दिया है। सड़क, बिजली, स्कूल और स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में तेजी लाई गई है। पिछड़े क्षेत्रों में मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) में सुधार लाने के उद्देश्य से आकांक्षी जिला कार्यक्रम ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। केंद्र सरकार के साथ समन्वय में कई राज्यों ने निराश नक्सली कैडरों को समाज में फिर से शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने वाली आत्मसमर्पण नीतियां शुरू की हैं। कई पूर्व उग्रवादियों ने हिसा छोड़ दी है और मुख्यधारा की आर्थिक गतिविधियों में शामिल हो गए हैं। वामपंथी उग्रवाद ने पिछले दशकों में हजारों लोगों की जान ली है, जिनमें नागरिक, सुरक्षाकर्मी और राजनीतिक नेता शामिल हैं। निरंतर उग्रवाद राष्टीय अखंडता और कानून व्यवस्था के लिए खतरा है। अस्थिरता और हिसा के कारण नक्सल प्रभावित क्षेत्र वर्षों से अविकसित रहे हैं। सक्रिय उग्रवाद की उपस्थिति निवेश को हतोत्साहित करती है और आवश्यक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को बाधित करती है। अब जबकि नक्सलवाद पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, निरंतर प्रयासों के संयोजन के माध्यम से इस स्थिति को बनाए रखना अनिवार्य है। छत्तीसगढ़ में नवीनतम अभियान संकेत देते हैं कि नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई अपने अंतिम चरण में प्रवेश कर रही है। सरकार, सुरक्षा बलों और नागरिक समाज को यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए कि जो लाभ प्राप्त हुए हैं वे अपरिवर्तनीय हों, जिससे अधिक सुरक्षित और समृद्ध भारत का मार्ग प्रशस्त हो।

नदियों को विवाद नहीं, विकास का माध्यम बनाएं

ललित गर्ग

नदियां मानव अस्तित्व का मूलभूत आधार है और देश एवं दुनिया की धमनियां हैं, इन धमनियों में यदि प्रदूषित जल पहुंचेगा तो शरीर बीमार होगा, लिहाजा हमें नदी रूपी इन धमनियों में शुद्ध जल के बहाव को सुनिश्चित करना होगा। के समक्ष आने वाले खतरों, जैसे प्रदूषण, आवास की क्षति और जल संसाधनों के अत्यधिक दोहन के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये हर साल १४ मार्च को, 'नदियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई दिवस' मनाया जाता है, जो नदियों और उनके संरक्षण के लिए एक वैश्विक मंच है, ताकि और समुदायों की एकजुटता बढ़ाई जा सके और नदियों के महत्व के बारे में जागरूकता लाई जा सके। इस दिवस की २०२५ की थीम 'हमारी नदियाँ, हमारा भविष्य' है।

इस दिवस की शुरुआत १४ मार्च १९९७ को कुर्टिबा, ब्राजील में बांधों से प्रभावित लोगों की पहली अंतर्राष्ट्रीय बैठक में थी। नदियों को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित किये जाने की जरूरत है। बढ़ते नदियों के प्रदूषण को रोकने के लिये उनमें को अपशिष्ट या सीवेज, कारखानों से निकलने वाले तेल, कैमिकल, धुंआ, गैस, एसिड, कीचड़, कचरा, रंग को डालने से रोकना होना, हमने जीवनदायिनी नदियों को अपने लोभ, स्वार्थ, लापरवाही कारण जहरीला बना दिया है। दुनियाभर में नदी जल एवं नदियों के लिए कानून बने हुए है, आवश्यक हो गया है कि उस पर पुनर्विचार कर देश एवं दुनिया के व्यापक हित में विवेक से निर्णय लिया जाना चाहिए। हमारे राजनीतिज्ञ, जिन्हें सिर्फ वोट की प्यास है और वे इस स्वार्थ की प्यास को इस पानी से बुझाना चाहते हैं।

नदियों को विवाद बना दिया है, आवश्यकता है तुच्छ स्वार्थ से ऊपर उठकर व्यापक मानवीय हित के परिप्रेक्ष्य में देखा जाये। जीवन में श्रेष्ठ वस्तुएं प्रभु ने मुफ्त दे रखी हैं- पानी, हवा और प्यार। और आज वे विवादग्रस्त, दूषित और झूठी हो गईं।

नदियों के लिए व२ट अंतर्राष्ट्रीय कार्य दिवस पर ताजा पानी उपलब्ध कराने, जैव विविधता को बढ़ावा देने से लेकर जलवायु को नियंत्रित करने और सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने तक स्वस्थ, निर्मल एवं पवित्र मुक्त बहने वाली नदियाँ इंसानी जीवन के साथ प्रकृति, के लिये महत्वपूर्ण हैं। यह दिन व्यक्तियों और संगठनों को नदी संरक्षण की दिशा में कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करता है। वर्तमान में भारत सहित दुनिया की तमाम नदियां संकट के दौर से गुजर रही हैं। नदियों के सामने जहां प्रदूषण व अतिक्रमण

जैसी भयावह चुनौतियां खड़ी हैं, उनमें निरंतर घट रही पानी की मात्रा भी गंभीर चता में डालने वाला है। कस्बों व शहरों के घरेलू, औद्योगिक कचरे एवं गन्दगी के बहिस्राव के कारण नदियों ने गंदे नाले का रूप लेना प्रारंभ कर दिया है। सैकड़ों बरसाती नदियां बहुत पहले ही अपना अस्तित्व खो चुकी हैं। जब नदियां प्रदूषित हो रही हैं तो किनारे बसा समाज भी उस प्रदूषण के असर से बच नहीं पा रहा है। हमारी कृषि व्यवस्था का कुछ हिस्सा भी उससे प्रभावित हो रहा है। आज गंदे पानी को नदी जल से अलग रखने के विषय पर गंभीरता से विचार करने आवश्यकता है। इस गंदे पानी को उपचारित करके उसे कृषि कार्यों व उद्योगों में उपयोग में लाया जा सकता है। हमारी जिन नदियों ने नालों का रूप धारण कर लिया है, उन्हें पुनः नदी बनाने की जरूरत है, नदियों के प्रति मित्रवत व्यवहार रखना तथा उनकी चता करना जरूरी है।

समूची दुनिया में पीने का शुद्ध पानी एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। पानी अत्यधिक जहरीला हो चुका है। इस कारण पीने के पानी की आपूर्ति भी नहीं हो पा रही है। लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य वैश्विक पर नदी प्रबंधन, नदी प्रदूषण और नदी संरक्षण से संबंधित मुद्दों को संबोधित करके विश्व स्तर पर लोगों को नदियों को बचाने के बारे में बात करने के लिए अग्रसर करना एवं उनमें जागरूकता पैदा करना है। नदियाँ भी अत्यधिक ख़तरे में हैं, विश्व की १० प्रतिशत से भी नदियां सुरक्षित हैं। इस दिवस की उपयोगिता एवं सार्थकता तभी है जब हम नदियों की रक्षा में अग्रणी समुदायों और नागरिक समाज के आंदोलनों को मजबूत करें। मजबूत डेटा और साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए खोजी अनुसंधान को बल दे। विनाशकारी परियोजनाओं का पर्दाफाश करने और उनका विरोध करने अभियानों को स्वतंत्र और निडर बनाएं। इस दिवस के माध्यम से एक ऐसी दृष्टि विकसित करना जो नदियों और उन पर निर्भर समुदायों की रक्षा करे। अगर इस ग्रह पर कोई जादू है तो वह पानी में है। यह हमें अपनी अर्थव्यवस्था के एक हिस्से के रूप में व्यापार वाणिज्य के लिए सस्ता और कुशल अंतर्देशीय परिवहन भी प्रदान करता है। यह पृथ्वी पर सबसे विविध और लुप्तप्राय वन्यजीवों में से कुछ का घर भी है।

भारत नदियों का एक अनोखा देश है जहां नदियों को पूजनीय माना जाता है लेकिन दुर्भाग्य से प्रदूषण एक बड़ी समस्या है। यमुना, महानदी, गोदावरी, नर्मदा, सधु (सधु), और कावेरी जैसी नदियों को देवी-देवताओं के रूप में पूजा जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासन में बनाया गया जल शक्ति मंत्रालय, नदी घाटियों में आर्द्रभूमि के पुनरुद्धार और संरक्षण और नदी प्रदूषण के खतरनाक स्तर से निपटने पर ध्यान केंद्रित करता देश के समक्ष वाटर विजन २०४७ प्रस्तुत किया गया है यानी आजादी के सौ वर्ष पूरे होने तक देश को प्रत्येक वह कार्य करना है, जो देश को पानी के मामलों में सबल बना सके। इसमें हमारी नदियां भी शामिल हैं। हमें अपनी नदियों को २०४७ तक निर्मल व बनाने के संकल्पित लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ना होगा। भारत की नदियों की दिन-ब-दिन बिगड़ती हालत एवं बढ़ते प्रदूषण पर पिछले चार दशकों से लगभग हर सरकार कोरी राजनीति कर रही है, प्रदूषणमुक्त नदियों का कोई ईमानदार प्रयास होता हुआ दिखाई नहीं दिया है।

नदियां हमारे जीवन की जीवन है, गति है, ताकत है। ये पानी, बिजली, परिवहन, मछली और मनोरंजन के लिए स्रोत हैं। नदियां पर्यावरण के लिए भी बहुत फ़ायदेमंद हैं। नदियों के किनारे बसे शहरों की वजह से ये आर्थिक रूप से भी अहम हैं, इनसे ताज़ा पीने का पानी मिलता है, बिजली बनती है, के लिए ज़रूरी उपजाऊ मिट्टी मिलती है। नदियों से जल परिवहन होता है। घरेलू और औद्योगिक गंदा पानी बहकर जाता है, जलवायु नियंत्रण में मदद करती हैं। नदियां प्राकृतिक संपदा हैं। नदियां आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रमुख स्रोत हैं, जिनके किनारे कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हैं। नदियों किनारे ही कई प्रमुख शहर, शैक्षिक और पर्यटन से जुड़े शहर बसे हैं। नदियों की साफ-सफाई के नाम पर कई हजार करोड़ रुपए बहा दिए गए हैं, लेकिन लगता है सब भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गये।

आधुनिक शोधों से भी प्रमाणित हो चुका है कि गंगा की तलहटी मेंउसके जल के अद्भुत और चमत्कारी होने के कारण मौजूद है। यद्यपि औद्योगिक विकास ने गंगा की गुणवत्ता को प्रभावित किया है, किन्तु उसका महत्व यथावत है। उसका महात्म्य आज भी सर्वोपरि है। गंगा स्वयं में संपूर्ण संस्कृति है, संपूर्ण तीर्थ है, जिसका एक गौरवशाली इतिहास रहा है। गंगा अपनी विभिन्न धाराओं से, विभिन्न स्रोतों से भारतीय सभ्यता को समृद्ध किया, गंगा विश्व में भारत की पहचान है। वह मां है, देवी है, प्रेरणा है, शक्ति है, महाशक्ति है, परम शक्ति है, सर्वव्यापी है, उत्सवों की वाहक है। एक महान तीर्थ है। पुराण कहते हैं कि पृथ्वी, स्वर्ग, के सभी तीन करोड़ तीर्थ गंगा में उपस्थित रहते हैं। गंगाजल का स्पर्श इन तीन करोड़ तीर्थों का पुण्य उपलब्ध कराता है। गंगा का जल समस्त मानसिक एवं तामसिक दोषों को दूर करता है। यह जल परम पवित्र एवं स्वास्थ्यवर्धक है, जिसमें रोगवाहक कीटाणुओं को भक्षण करने की क्षमता गंगा का दर्शन मात्र ही समस्त पापों का विनाश करना है। १४० सालों में आने वाला महाकुंभ हाल ही में प्रयासराज में संगम पर ६६ करोड़ लोगों का साक्षी बना, जिस गंगा का इतना महत्व है, उपयोगिता है तो फिर क्यों उसके प्रति उपेक्षा एवं उदासीनता बरती जाती रही प्रेषकः

लेखक, पत्रकार एवं स्तंभकार
दिल्ली-९८११०५११३३

'संसद ही सर्वोपरि', न्यायपालिका बनाम कार्यपालिका की बहस के बीच उपराष्ट्रपति का बड़ा बयान

नई दिल्ली : उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने एक बार फिर न्यायपालिका बनाम कार्यपालिका बहस के बीच सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि संसद ही सर्वोपरि है। हर सांविधानिक पदाधिकारी द्वारा बोला गया प्रत्येक शब्द सर्वोच्च राष्ट्रीय हित से जुड़ा होता है।

दिल्ली विवि में एक कार्यक्रम में न्यायिक अधिकारों के अतिक्रमण पर सुप्रीम कोर्ट को घेरा। उन्होंने कहा कि संविधान कैसा होगा, ये वही तय करेंगे जो चुनकर आए हैं। इसके ऊपर कोई नहीं होगा।

संसद सर्वोपरि है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट की दो टिप्पिणयों का हवाला दिया। इसमें गोरकनाथ मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि प्रस्तावना संविधान का हिस्सा नहीं है। जबकि दूसरे केशवानंद भारती मामले में कोर्ट ने कहा था कि यह संविधान का हिस्सा है।

आ चुका भारत के सेमीकंडक्टर का दौर

नई दिल्ली : चिप डिज़ाइन को एक रणनीतिक आवश्यकता मानते हुए, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय अपनी श्रृंखलाबद्ध एवं सक्रिय पहलों के साथ, पूरे देश में ३०० से अधिकसंगठनों (जिसमें २५० शैक्षणिक संस्थान और ६५ स्टार्ट-अपकंपनियां शामिल हैं) में सेमीकंडक्टर दृष्टिकोण को व्यवस्थित करनेकी प्रक्रिया में है। इन कदमों का उद्देश्य रचनात्मक सक्षमता वाले युग कीशुरुआत करना है, जहां देश में कहीं से भी, स्वभाविक कौशल वाला कोई भी व्यक्ति सेमीकंडक्टर चिप्स डिज़ाइन कर सकता है। इस प्रक्रिया में, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप कि में डिज़ाइन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मेक इन इंडिया', चिप डिज़ाइन को लोकतांत्रिक बनाया जाएगा।

सी२एस कार्यक्रमका उद्देश्य सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन में विशेषज्ञता प्राप्त बी.टेक, एम.टेक और पीएचडी स्तर पर उद्योग-अनुकूल ८५,००० मानव संसाधन तैयार करना है। यह कार्यक्रम चिप डिज़ाइन, निर्माणएवं परीक्षण में छात्रों को पूर्ण व्यावहारिक प्रदान करके एक समग्रदृष्टिकोण अपनाता है। इसे नियमित प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से उद्योगसहयोगियों की भागीदारी से प्राप्त किया जाता है, और छात्रों को चिप डिज़ाइन, निर्माण और परीक्षण संसाधनों, जैसे ईडीएउपकरणों, अपने चिप्स के निर्माण के लिए सेमीकंडक्टर फ़ाउंड्रीज़ तक पहुंच प्रदान करके मेंटॉरशिप और सहायता प्रदान किया है। इन अवसरों में एएसआईसी, एसओसी और आईपी कोर डिजाइनों के कार्यशील प्रोटोटाइप के विकास के लिए अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं का कार्यान्वयन शामिल है।

चिपइन केंद्र सी२एस कार्यक्रम के अंतर्गत स्थापित किया गया है, यह सी-डैक में स्थापित सबसे बड़े सुविधाओं में से एक है, जिसका लक्ष्य देश में सेमीकंडक्टर समुदाय के दरवाज़े पर चिप डिज़ाइन अवसंरचना लाना है। यह एक केंद्रीकृत डिजाइन सुविधा है, जो न केवल ५एनएम या उन्नत नोड तक जाने वाले संपूर्ण चिप डिजाइन चक्र के लिए सबसे उन्नत उपकरणों की मेजबानी करती है, बल्कि फाउंड्री और पैकेजग में डिजाइन के निर्माण के लिए समग्र भी प्रदान करती है।

सी२एस कार्यक्रम के अंतर्गत, २० मार्च २०२५ को केंद्रीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने सचिव श्री कृष्णन, अतिरिक्त सचिव श्री अभिषेक सह और समूह समन्वयक श्रीमती सुनीता वर्मा, एमईआईटीवाई की गरिमामयी उपस्थिति में निमलिखित घोषणाएं की।

प कोडग, डिज़ाइन चुनौतियों और विशेषज्ञ-नेतृत्व वाले प्रशिक्षण के गहन के बाद, ४० उत्कृष्ट टीमों, २०० नवप्रवर्तकों ने एएमडी, सायनॉइप्स और कोरईएल टेक्नोलॉजीज के साझेदारी में शुरू किए गए १०० घंटे के गहरेतकनीकी एनालॉग और डिजिटल हैकाथॉन के ग्रैंड फिनाले में मुकाबला किया। ईडीए और क्लाउड संसाधनों से सुसज्जित, उन्होंने वास्तविक दुनिया की समस्याओं का सामना किया, जिसमेंडिजिटल डिज़ाइन में एचडीएफपीजीए पर लाइव छवि प्रसंस्करण को बढ़ाना और एनालॉग डिज़ाइन में जटिल वोल्टेज नियामक सर्किटों को अनुकूलितकरना शामिल है। माननीय मंत्री द्वारा छह विजेताओं की टीमों की घोषणा की गई।

एनालॉग डिजाइन हैकाथन के विजेता

- आईआईटी दिल्ली की टीम इंट्यूशन को पहला पुरस्कार मिला
- एनआईटी राउरकेला की टीम एनालॉग एज को पुरस्कार मिला
- आईआईटी गुवाहाटी की टीम फेटमैनिक्स को तीसरा पुरस्कार मिला

डिजिटल डिज़ाइन हैकथॉन के विजेता

- आईआईटी बॉम्बे की टीम आरआईएससीबी को पहला पुरस्कार मिला
- सविता इंजीनियरिग कॉलेज की टीम सिलिकॉन स्क्रिप्टर्स को दूसरा पुरस्कार मिला
- आईआईटी (बीएचयू वाराणसी) की टीम डेडलस को तीसरा पुरस्कार मिला।
- 'बीएलडीसी कंट्रोलर का स्वदेशी विकास का कार्य मेसर्सवेर्वेसेमी माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लिमिटेड को प्रदान किया गया।

'बीएलडीसी कंट्रोलर चिप' की निमलिखित विशेषताएं हैं: आत्मनिर्भर सेमीकंडक्टर समाधान के लिए ९०% बीओएम भारत में निर्मित, १.५० डॉलर से कम में पूर्ण पावर एवं नियंत्रण समाधान तथा १० मिलियन यूनिट/वर्ष की स्केलेबिलिटी आदि।

भारत का सुरक्षित ब्राउजर तैयार

नई दिल्ली : विश्व खुशहाली दिवस के अवसर पर, भारत सरकार ने सुरक्षित और अभिनव डिजिटल समाधानों के माध्यम से नागरिकों को सशक्त बनाने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। भारत का आईटी क्षेत्र जो २८२ बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक राजस्व उत्पन्न करता है, का देशी हार्डवेयर और सॉफ़्टवेयर उत्पाद बनाने की ओर बढ़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एम. ई. आई.टी. वाई) ने आत्मनिर्भर भारत पहल के अंतर्गत एक स्वदेशी वेब ब्राउज़र विकसित करने के लिए एक महत्वाकांक्षी चुनौती शुरू करके तकनीकी आत्मनिर्भरता की ओर एक दूरदर्शी छलांग लगाई। नवाचार को बढ़ावा देने को मजबूत करने के उद्देश्य से इस ऐतिहासिक पहल का संचालन सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ़ एडवांस्ड कंप्यूटग (सी-डैक), बैंगलोर द्वारा किया गया था।

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव नेभारतीय वेब ब्राउज़र विकास चुनौती आईडब्ल्यूबीडीसी के विजेताओं की घोषणा की। २० मार्च २०२५ को एम. ई. आई. टी. वाई द्वारा एक समारोह में, उन्होंने उन प्रतिभागियों पर बहुत गर्व व्यक्त किया जिन्होंने उत्कृष्टनवाचारों, उल्लेखनीय रचनात्मकता, विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया और भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप एक विश्वसनीय वेब ब्राउज़र के विकास में महत्वपूर्ण प्रगति की। ये विकास आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को साकार करने और भारत के डिजिटल भविष्य को सशक्त बनाने की ओर एक कदम आगे हैं।

श्रीअश्विनी वैष्णव ने भारत सरकार के व्यापक दृष्टिकोण पर बल दिया कि भारत को सेवा राष्ट्र से उत्पाद राष्ट्र में बदलना है, जो प्रौद्योगिकी, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर समाधानों में आत्मनिर्भर है। इस दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में, स्वदेशी वेब ब्राउज़र विकसित करने के लिए आईडब्ल्यूबीडीसी की गई, जिसमें स्टार्टअप, छात्रों और शोधकर्ताओं की उत्साही भागीदारी प्राप्त हुई, जो भारत की डिजिटल आत्मनिर्भरता में योगदान देने के लिए उत्सुक हैं। श्री वैष्णव ने नवाचार से बड़े पैमाने पर उत्पादीकरण की यात्रा में तेजी लाने की आवश्यकता पर भी बल दिया, जिससे घरेलू डिजिटल समाधानों को व्यापक रूप से अपनाया जा सके और स्टार्टअप और उद्योग को प्रतिस्पर्धी सुरक्षित और स्केलेबल तकनीक विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके जो भारत की आत्मनिर्भरता में योगदान दे।

वेबब्राउज़र इंटरनेट के प्राथमिक प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जोवेब सर्फिंग, ईमेल, ई-ऑफिस और ऑनलाइन लेनदेन जैसी गतिविधियों को सक्षम बनाता है। स्वदेशी ब्राउज़र के कई फायदे हैं। सबसे पहले, यह बढ़ी हुई डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करता है, जिसमें उपयोगकर्ता डेटा देश की सीमाओं के भीतर रखा जाता है। इससे संवेदनशील जानकारी पर बेहतर नियंत्रण होता है। दूसरा, यह भारत के डेटा सुरक्षा अधिनियम का अनुपालन करता है, जिससे गोपनीयता सुनिश्चित होती है और डेटा सुरक्षा उच्चतम मानकों का पालन होता है। इसके अतिरिक्त भारतीय नागरिकों द्वारा उत्पन्न सभी डेटा भारत में ही रहेंगे, इससे देश की डिजिटल संप्रभुता बढ़ेगी। इसके अलावा, ब्राउज़र आईओएस, एंड्रॉइड और वडोज सहित सभी प्रमुख प्लेटफ़ॉर्म के साथ संगत होगा, इससेसभी डिवाइस में व्यापक पहुँच और उपयोगिता सुनिश्चित होगी।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत के अपने वेब ब्राउज़र का विकास संपूर्ण भारतीय डिजिटल स्टैक के निर्माण की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम है। ज़ोहो कॉरपोरेशन विजेता के रूप में उभरा, टीम पग- एकस्टार्टअप प्रथम रनर-अप और टीम अजना एक स्टार्टअप द्वितीय रनर-अप रही।

उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देते हुए प्रथम रनर-अप और द्वितीय रनर-अप को क्रमशः १ करोड़, ७५ लाख और ५० लाख का पुरस्कार दिया गया। विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म में ब्राउज़रों के डिज़ाइन के लिए जियो विश्वकर्मा का विशेष उल्लेख किया गया। केंद्रीय मंत्री ने टियर २ और टियर ३ शहरों से विजेताओं पर भी अपनी संतुष्टि व्यक्त की और कहा कि देश के छोटे शहरों में महत्वपूर्ण प्रतिभा और क्षमता को उजागर किया।

इस अवसर पर इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव श्री एस.कृष्णन ने स्वदेशी वेब ब्राउजर के महत्व और इसकी विशेषताओं के बारे में बताया। श्री अभिषेक सह, अतिरिक्त सचिव, श्री भुवनेश कुमार, अतिरिक्तसचिव, श्री ई. मगेश, महानिदेशक सी-डैक, श्री कुमार, सीसीए, श्रीमती सुनीता वर्मा, वैज्ञानिक 'जी' और जीसी (आरएंडडी) तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, सी-डैक और उद्योगों के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

अपने स्वयं के सर्टिफिकेट ट्रस्ट-स्टोर के साथ, ये स्वदेशी ब्राउजर भारतीय उपयोग कर्ताओं की जरूरतों को पूरा करेंगे और भरोसेमंद डिजिटल इंटरैक्शन केलिए एक नया मानक करेंगे।

भारतीय वेब ब्राउज़र डेवलपमेंट चैलेंज कोवेब ब्राउज़ग में एक परिवर्तनकारी यात्रा के लिए मंच तैयार करते हुए शुरू किया गया था। तीन प्रगतिशील चरणों- विचार, प्रोटोटाइप और उत्पादीकरणमें संरचित- इस चुनौती में ब्राउज़र को कई महत्वपूर्ण विशेषताओं के साथडिज़ाइनकरना आवश्यक था, जिसमें सीसीए रूट प्रमाणपत्र के साथ एक समर्पित ट्रस्ट स्टोर, ब्राउज़र के भीतर डिजिटल साइनग, बच्चों के अनुकूल ब्राउज़ग, अभिभावक नियंत्रण, सभी आधिकारिक भारतीय भाषाओं के साथ सहजसंगतता, वेब३ समर्थन और अत्याधुनिक ब्राउज़र क्षमताएँ शामिल थीं।

प्रतियोगिता को स्टार्टअप, उद्योग के नेताओं और शिक्षाविदों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, जिसने भारत की अपार प्रतिभा और डिजिटल को प्रदर्शित किया। चुनौती के लिए उल्लेखनीय ४३४ टीमों ने पंजीकरण कराया, जोएक कठोर और प्रतिस्पर्धी यात्रा पर निकल पड़े। जैसे-जैसे चुनौती सामने आई, आठ उत्कृष्ट टीमें अंतिम चरण में पहुँचीं, जहाँ उनके नवाचारों का मूल्यांकन एक प्रतिष्ठित जूरी पैनल द्वारा किया गया।

'हीरामंडी' से मशहूर होने के बाद भी अभिनेत्री को नहीं मिला काम

मुंबई : 'हीरामंडी' फिल्म से चर्चा में आईं अभिनेत्री अदिति राव ने अपने करियर और संघर्ष के दिनों की कहानी शेयर की। साथ ही उन्होंने बताया कि कैसे उन्हें फिल्मों के लिए झूझना पड़ा। जानिए पूरी खबर।

संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी फिल्म 'हीरामंडी' ने अदिति राव को उनकी गजगामिनी चाल के लिए खास पहचान दिलाई। अभिनेत्री की कई जानी मानी हस्तियों को साथ तुलना की जाने लगी। इतना होने के बावजूद भी अदिति को फिल्मों के लिए करना पड़ा संघर्ष। आइए जानते हैं अभिनेत्री ने क्या कहा।

'हीरामंडी' की सफलता रही बेअसर

हाल ही में बॉलीवुड अभिनेत्री अदिति राव कोरियोग्राफर फराह खान के यूट्यूब चैनर पर पहुंचीं, जहां उन्होंने अपने अनुभवों का शेयर किया। फराह ने उनके 'हीरामंडी' फिल्म में गचगामिनी चाल से इंटरनेट पर सनसनी मचा देने वाली बात कही। इसपर अभिनेत्री ने बताया कि इस फिल्म ने उन्हें एक खास मुकाम पर पहुंचा दिया था। साथ ही उन्होंने बताया कि उन्हें लगा कि फिल्म में बंपर सफलता से उनके पास काम की लाईन लगा जाएगी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह सोच में पड़ गई थी, यह उनके लिए फिल्मों का सूखा जैसा अनुभव था। फराह ने मजाक में पूछा अच्छा तो इसी समय आपने शादी कर ली थी तो, अदिति ने कहा कि उन्होंने सिद्धार्थ से उसी दौरान पिछले साल शादी कर ली थी।

एक नजर 'हीरामंडी' की ओर

संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी फिल्म 'हीरामंडी' साल २०२४ में रिलीज हुई थी। अदिति ने फिल्म में बिब्बोजान का किरादार निभाया था। फिल्म में १९४० के दशक में वैश्याओं और हीरामंडी की सांस्कृतिक वास्तविकता को दर्शाया गया था। इस फिल्म में अदिति के अलावा मनीषा कोइराला, सोनाक्षी सिन्हा, फरदीन खान, रिचा चड्ढा, जैसे कई कलाकार मौजूद थे।

अदिति राव का वर्कफ्रंट

अभिनेत्री राव की फिल्मों की बात करें तो अदिति अपनी आगामी फिल्म रोमांटिक ड्रामा में नजर आने वाली हैं, जिसके शीर्षक की अभी घोषणा नहीं हुई है। इसमें वह अविनाश तिवारी के साथ नजर आएंगी। इस फिल्म का निर्देशन इम्तियाज अली कर रहे हैं, जो नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी।

तमन्ना भाटिया ने तोड़ी चुप्पी

ब्रेकअप के बाद बयां किया दिल का हाल

नई दिल्ली : पिछले दिनों खबर आई कि तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा का ब्रेकअप हो गया है। इसके बाद से फैंस के बीच ये चिता थी कि आखिर ऐसा क्या हुआ जिसकी वजह से दोनों एक्टर अलग हो रहे हैं।

तमन्ना भाटिया पैन इंडिया एक्ट्रेस हैं, जो फिल्म 'बाहुबली' के बाद से लोगों के दिलों में राज कर रही हैं. तमन्ना ने 'स्त्री २' में भी नजर आईं. साउथ सिनेमा से लेकर बॉलीवुड तक में अपनी फिल्मों को लेकर अक्सर चर्चाओं में आने वालीं तमन्ना अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी काफी चर्चाओं में रहती हैं. साल २०२२ से वो अपनी लव लाइफ को लेकर सुर्खियों में हैं. 'लस्ट स्टोरीज २' की शूटिग के दौरान वो अपना दिल विजय वर्मा से लगा बैठीं. दोनों ने अपने प्यार को कबूल भी किया. लेकिन अब दोनों की राहें अलग हो गई हैं. विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया के ब्रेकअप की अफवाहें हैं. दोनों ने चुप्पी साध रही है. लेकिन हाल ही में तमन्ना ने प्यार और रिश्ते के बारे में जो कुछ कहा, वो फैंस के शक को यकीन में बदल रहा है.

क्या है दोनों अलग हीने का कारण

ये खबर और भी हैरान तब करती है जब पता था कि ये अपने रिश्ते को आगे बढ़ाना चाहते हैं। अफवाहों के बीच अब यह पता चला है कि दोनों सितारों के बीच तनाव की वजह क्या हो सकती है। न्यूज १८ की हालिया रिपोर्ट मानें तो तमन्ना और विजय के बीच दरार तब शुरू हुई जब विजय पर घर बसाने का दबाव था।

तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा की जोड़ी क्यों अलग हुई? ये सवाल लोगों के मन में हैं. तमन्ना भाटिया जल्द शादी करना चाहती था और ये ही दोनों के बीच मतभेद का कारण बना. अब तमन्ना भाटिया ने प्यार और रिलेशनशिप पर अपनी चुप्पी तोड़ी है.

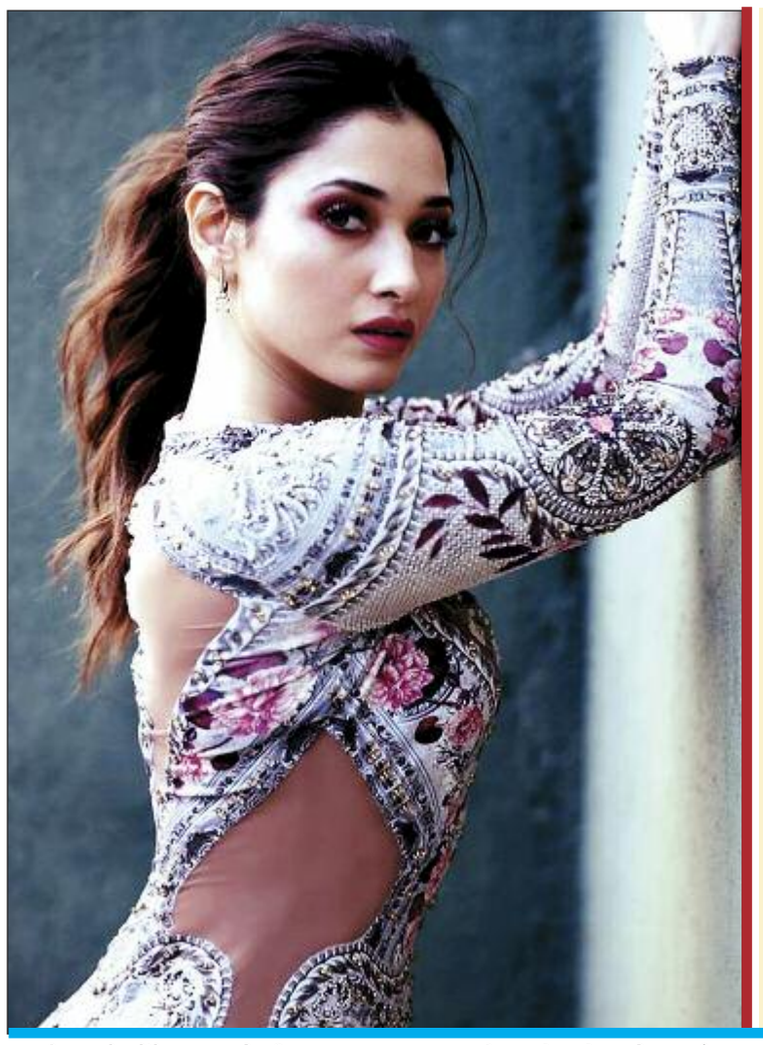

दोस्त बने रहेंगे तमन्ना और विजय

इस पहले खबर आई थी कि लस्ट स्टोरीज २ के एक्टर्स अलग हो गए हैं। हालांकि इन सबके बीच दोमों ने एक दूसरे का अच्छा दोस्त बने रहने का फैसला किया है। सूत्र ने कहा, "तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा एक कपल के तौर पर कुछ हफ्ते पहले अलग हो गए थे, लेकिन वे अच्छे दोस्त बने रहने की योजना बना रहे हैं। दोनों अपने-अपने शेड्यूल में कड़ी मेहनत कर रहे हैं।" हालांकि, अभी तक न तो तमन्ना ने इस मामले पर कोई टिप्पणी की है।

प्यार में कोई शर्त नहीं होती

तमन्ना भाटिया ने हाल ही में ल्यूक कॉउटिन्हो के साथ एक बातचीत में विजय वर्मा के साथ अपने रिश्ते पर तो कुछ नहीं कहा, लेकिन प्यार और रिलेशनशिप पर खुलकर बात की. उन्होंने साफ-साफ शब्दों में कहा कि प्यार में कोई शर्त नहीं होती. अगर ऐसा होता है तो वो प्यार नहीं. उन्होंने कहा जब आप प्यार में किसी से उम्मीद या अपेक्षा नहीं होना चाहिए, अगर ऐसा है तो वो प्यार नहीं बिजनेस है.

२०२२ से कर रहे हैं एक दूसरे को डेट

तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा ने साल २०२२ में एक-दूसरे को डेट करना शुरू किया था। उन्हें नेटफ्लिक्स की 'लस्ट स्टोरीज़ २' में सुजॉय घोष के सेगमेंट में एक साथ देखा गया था, जिसका प्रीमियर जून २०२३ में हुआ था। लंबे समय बाद फिल्म कंपेनियन दो दिए एक इंटरव्यू में तमन्ना ने अपने रिश्ते की पुष्टि की थी।

एक इंटरव्यू में विजय ने बताया था कि वे अपने रिश्ते को छिपाते नहीं हैं, लेकिन फिर भी वे अपनी प्राइवेसी को वैल्यू देते हैं। उनके फोन में कपल की हजारों फोटोज हैं लेकिन वो उसे सिर्फ अपने लिए रखते हैं।

तमन्ना करना चाहती हैं शादी

कथित तौर पर, तमन्ना जल्द ही शादी के बंधन में बंधना चाहती थीं जबकि विजय अभी इसके लिए इच्छुक नहीं थे। समाचार पोर्टल ने दावा किया कि यह बात दोनों के बीच विवाद का मुद्दा बनती चली गई। हालांकि हम इसकी पुष्टि नहीं करते हैं।

क्यों हीरोइन की गले में हार पहनाने से घबरा रहे थे अशोक कुमार

मुंबई : सिनेमा के सुनहरे दौर की हर दूसरी फिल्म में नजर आ जाते हैं अशोक कुमार। दादामुनि के नाम से मशहूर हुए अशोक कुमार ने क्यों पहली ही फिल्म में तोड़ डाले थे फिल्म के खलनायक के पांव। अशोक कुमार की जन्मतिथि (१३ अक्टूबर) पर अनंत विजय बता रहे हैं उनसे जुड़े कुछ रोचक प्रसंग...

१९३६ में अशोक कुमार ने की थी शुरुआत

सुबह के साढ़े नौ बजे थे। बॉम्बे टॉकीज की एक फिल्म की शूटिग शुरू होने वाली थी। बॉम्बे टॉकीज के कर्ता-धर्ता हिमांशु राय ने अपनी नई फिल्म में एक नए लड़के को नायक के तौर पर लेने का निर्णय किया था। फिल्म का नाम था 'जीवन नैया' और युवक थे अशोक कुमार। सुबह-सुबह जब अशोक शूटिग के लिए फिल्म के सेट पर पहुंचे तो उनको देखकर हिमांशु राय चौंके। अशोक कुमार ने बेतरतीब तरीके से अपने बाल कटवा लिए थे।

हिमांशु राय ने उनसे पूछा कि ये क्या है अशोक? हकलाते हुए अशोक कुछ बोलते इसके पहले ही हिमांशु राय ने हेयर ड्रेसर को बुलाकर कहा कि इनके बाल ठीक करो। विग लगाओ। अशोक ने हिमांशु राय की ओर कातर भाव से देखते हुए कहा, "सर कुछ कहना चाहता हूं"।

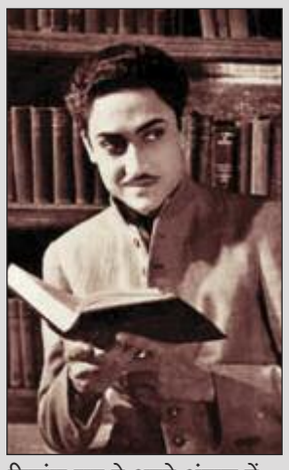

हिमांशु राय ने अपने अंदाज में कहा कि- बोलो। अशोक ने हिमांशु राय का हाथ पकड़ा और उनको सेट के एक कोने में लेकर जाकर धीरे से बोले, 'मैं आपके कहने पर फिल्म में काम तो कर लूंगा पर मुझे नायिका के आलिंगन के लिए मत कहिएगा। वो मुझसे हो नहीं पाएगा।'

हार पहनाते हुए अशोक कुमार के कांपने लगे थे हाथ

हिमांशु राय ने पूछा- क्यों?, जब अशोक चुप रहे तो हिमांशु ने आश्वस्त किया कि ऐसा कोई दृश्य फिल्म में नहीं होगा। उसके बाद मेकअप आर्टिस्ट अशोक को लेकर चली गई। मेकअप और गेटअप ठीक करवाकर जब अशोक सेट पर पहुंचे तो उनके होश उड़ गए। सामने देविका रानी थीं, जिनके साथ उनको पहला ही शॉट देना था।

अशोक को निर्देशक ने सीन समझाया। अशोक नर्वस हो रहे थे। हिमांशु राय उनके पास पहुंचे, उनके कंधे पर हाथ रखकर बोले कि ये बहुत ही सामान्य बात है कि एक लड़का अपनी प्रेमिका के लिए सोने का हार लाता है और उसके गले में डालता है। तुमको इतना ही करना है। अशोक कुमार हाथ में सोने की चेन लेकर देविका रानी के पास पहुंचते हैं। नायिका के करीब पहुंचते ही वो नर्वस हो जाते हैं और बाथरूम की ओर भाग जाते हैं। थोड़ी देर बाद वापस आते हैं। दृश्यांकन आरंभ होता है।

जुनून और रिश्ते का 'टेस्ट' लेती आर माधवन-नयनतारा और सिद्धार्थ की फिल्म

मुंबई : एक क्रिकेट और तीन जिंदगियां जिसकी कड़ी इस खेल से जुड़ी हुई हैं। यूं तो बड़े पर्दे या ओटीटी पर क्रिकेट से जुड़ी कई कहानियों पर फिल्में बन चुकी हैं, लेकिन २ घंटे २५ मिनट की फिल्म टेस्ट (Test) एक ऐसे जुनून की कहानी है जो किसी को तबाह करती है तो किसी को आबाद।

आर माधवन, नयनतारा और सिद्धार्थ जैसे दिग्गज सितारों से सजी टेस्ट ४ अप्रैल को ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई। अगर आप इस स्पोर्ट्स ड्रामा को देखने का मन बना रहे हैं तो पहले जान लीजिए कि यह फिल्म कैसी है?

एक क्रिकेट जिस पर टिकीं तीन जिंदगियां और मकसद सिर्फ एक- अपने जुनून को तसल्ली देना। अर्जुन (सिद्धार्थ) एक उम्दा क्रिकेट प्लेयर जिसे कुछ खराब प्रदर्शनों के चलते कोच उसे रिटायर करने का सोच रही है और अपनी जगह बनाने के लिए वह हाथ पैर मार रहा है। एक MIT से डबल डॉक्टरेट की पढ़ाई करने वाला सरवानन (आर माधवन) को जॉब छोड़ पागलों की तरह देश को बदलने और नई टैक्नोलॉजी पर काम करने के लिए बेताब है। दूसरी ओर सरवानन की पत्नी कुमुध (नयनतारा) जो मां बनने के लिए किसी भी हद तक गुजरने के लिए तैयार है।

अर्जुन और कुमुध स्कूल से ही एक-दूसरे को जानते हैं। कुमुध के पिता अर्जुन के कोच हुआ करते थे और वह मन ही मन उसे पसंद भी करती है जिससे वह हमेशा इनकार करती है। कुमुध अर्जुन के बेटे आदित्य की स्कूल टीचर है और उसे बहुत प्यार देती है। पहले अर्जुन उसे पहचान नहीं पाता है लेकिन बाद में उसे कुमुध के बारे में पता चलता है। दूसरी ओर सरवानन जो पानी से फ्यूल बनाने के प्रोजेक्ट के लिए लाखों का लोन लिए बैठा है, वो भी झूठ बोलकर कि वह कुमुध के पिता की कैंटीन चलाने के लिए लोन लिया है। वह उसके पिता की जमीन के कागजात भी ले लेता है।

कहानी में ट्विस्ट लाता क्लाईमेक्स

तीनों की जिंदगी में मोड़ तब आता है, जब अर्जुन को भारत-पाकिस्तान के बीच टेस्ट मैच खेलने का आखिरी मौका मिलता है, आर माधवन को अपने प्रोजेक्ट के लिए ५० लाख रुपये की जरूरत है और कुमुधा को IVF के लिए ५ लाख रुपये चाहिए। तीनों की सुई अटकती है क्रिकेट और अर्जुन के बेटे आदित्य पर। माधवन जो शुरू में हीरो लगता है, आखिर में वही विलेन बन जाता है। जब कुमुध अर्जुन के बेटे आदित्य को अपने घर ले आती है तब सरवानन मौके का फायदा उठाया है और एक ऐसे शख्स के साथ हाथ मिलाता है जो अर्जुन को मैच फिक्स करने के लिए उकसा रहा है।

मनोज कुमार की प्रार्थना सभा में फूटा गुस्सा

महिला के हाथ थपथपाने पर भड़कीं जया बच्चन

सोशल मीडिया पर मिल रही आलोचना

मुंबई : एक्टर-डायरेक्टर मनोज कुमार का 87 साल की उम्र में 4 अप्रैल को निधन हो गया था। 5 अप्रैल को उनका अंतिम संस्कार किया गया। जबकि 6 अप्रैल को मनोज कुमार की प्रेयर मीट रविवार की शाम मुंबई के होटल में रखी गई। इस दौरान बॉलीवुड के कई कलाकार एक्टर को श्रद्धांजलि देने के लिए पहुंचे।

इस दौरान जया बच्चन भी सफेद रंग के सूट में नजर आईं। वीडियो में देखा जा सकता है कि वे खड़ी थीं, तभी एक महिला ने उनकी पीठ पर हाथ थपथपाया, जिससे वे चौंक कर मुड़ीं और तुरंत उस महिला का हाथ पकड़कर जोर से झटक दिया। साथ ही वीडियो बना रहे महिला के पति को भी उन्होंने फटकार लगाई। इसके बाद दोनों ने हाथ जोड़ा और वहां से चले गए।

अब जया बच्चन के इस वीडियो पर फैंस भी जमकर अपना रिएक्शन दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'आखिर क्यों लोग जया बच्चन के साथ तस्वीर खिचवाना चाहते हैं। वह बहुत ही घमंडी और गुस्से वाली लगती हैं। बेचारी ऐश्वर्या राय कैसे उन्हें संभालती होंगी।', दूसरे ने लिखा, 'इन्हें देखकर हमेशा मूड खराब हो जाता है।', तीसरे ने लिखा, 'ये बहुत ज्यादा घमंडी है।', इसके अलावा कई और लोगों ने उनकी आलोचना की है।

एक्ट्रेस और सांसद जया बच्चन अक्सर अपने तेवर के कारण सुर्खियों में छाई रहती हैं। कभी मीडिया पर भड़कती हैं तो कभी किसी को फटकार लगा देती हैं, जिस कारण सोशल मीडिया पर उनकी काफी आलोचना भी होती है।

मनोज कुमार का शनिवार को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया था। मुंबई में जुहू स्थित पवनहंस श्मशान घाट पर उनके पार्थिव शरीर को तिरंगे में लपेटकर लाया गया था। यहां उन्हें 21 तोपों की सलामी भी दी गई।

बता दें, 87 साल की उम्र में शुक्रवार को मनोज कुमार का निधन हो गया था। मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली थी। देशभक्ति की फिल्में बनाने के कारण उन्हें भारत कुमार के नाम से भी जाना जाता है।

प्रियंका चोपड़ा को फिल्म की हीरोइन बनाना चाहते थे सुभाष घई, बाद में करीना कपूर ने किया काम

नई दिल्ली : ९० और २००० के दशक में कई ऐसी फिल्में आईं, जो उस समय पर भले ही न चली हो, लेकिन आज उन्हें काफी प्यार मिलता है। शाह रुख खान की डुप्लीकेट से लेकर मुझसे दोस्ती करोगी, लक्ष्य और रुद्राक्ष जैसी कई फिल्में हैं, जो उस समय पर थिएटर में फ्लॉप रहीं। इस लिस्ट में एक फिल्म हिदी सिनेमा के जाने-माने डायरेक्टर सुभाष घई की भी हैं, जिन्होंने एक्शन से लेकर म्यूजिकल कई फिल्में बनाई।

सुभाष घई की एक ऐसी ही फिल्म रिलीज हुई थी साल २००१ में, जो उस साल की सबसे बड़ी फ्लॉप फिल्म थी। बड़ी-बड़ी अभिनेत्रियों का करियर बनाने के लिए मशहूर सुभाष घई ने अपनी इस फिल्म के लिए भी बिल्कुल फ्रेश फेस चाहते थे। वह मूवी में ऋतिक रोशन के साथ इस मूवी में २००० में मिस वर्ल्ड बनीं प्रियंका चोपड़ा को कास्ट करना चाहते थे, लेकिन किसी कारणवश उनकी ये तमन्ना अधूरी ही रह गई। कई अभिनेत्रियों से रिजेक्ट होकर आई फिल्म करीना को मिल गई।

इस फिल्म में सुभाष घई करना चाहते थे प्रियंका चोपड़ा को कास्ट

१९९७ में शाह रुख खान और महिमा चौधरी स्टारर फिल्म 'परदेस' से म्यूजिकल फिल्में बनाने का सफर शुरू करने वाले दिग्गज निर्देशक-निर्माता सुभाष घई की साल २००१ में फिल्म रिलीज हुई थी, जिसका टाइटल था 'यादें'। सिगल पिता और उनकी तीन बेटियों की कहानी को दर्शाती इस फिल्म में करीना कपूर खान ने जैकी श्रॉफ की बेटी ईशा पुरी की भूमिका निभाई थी।

अमेजन प्राइम वीडियो की ट्रिविया स्टोरी में ये बताया गया है कि सुभाष घई की फिल्म 'यादें' के लिए पहली च्वाइस करीना कपूर खान नहीं थी। इसमें बताया गया कि जब साल २००० में प्रियंका चोपड़ा मिस वर्ल्ड बनी थीं, तो सुभाष घई उनको अपनी इस फिल्म में ऋतिक रोशन के अपोजिट कास्ट करना चाहते थे। हालांकि, कॉन्ट्रैक्ट में बंधे होने की वजह से प्रियंका चोपड़ा ने इस फिल्म का हिस्सा बनने से इनकार कर दिया।

कसूर मूवी की वकील 'सिमरन', ५३ की उम्र में भी ढहाती हैं कहर

नई दिल्ली : किसे पता था कि परिवार के साथ वेकेशन मनाने भारत आईं एक कैनेडियन एक्ट्रेस भारत में मशहूर हो जाएंगी। हम बात कर रहे हैं इंडियन-कैनेडियन एक्ट्रेस लीजा रे (Lisa Ray)। साल २००१ में आई थ्रिलर फिल्म 'कसूर' अपने दिलचस्प प्लॉट, दमदार अभिनय और खूबसूरत गानों के लिए आज भी याद की जाती हैं। इस फिल्म में आफताब शिवदासानी के साथ मुख्य भूमिका निभाकर लीजा रे की किस्मत रातोंरात चमक गई थी।

अपनी मासूमियत और शानदार स्क्रीन प्रेजेंस से सुपरमॉडल रह चुकीं लीजा रे ने दर्शकों के दिलों में एक खास जगह बना ली थी। आज वह पर्दे पर कम ही दिखती हैं, लेकिन खूबसूरती में किसी से कम नहीं हैं।

रातोंरात बनीं स्टार

'कसूर' में लीजा रे की भूमिका एक ऐसी महिला की थी जो प्यार और न्याय के बीच उलझी हुई थी। उनकी सादगी और किरदार की गंभीरता ने दर्शकों को बांधे रखा था। हालांकि, उस समय लीजा हिदी सिनेमा के लिए नई थीं और उनकी आवाज को फिल्म में डब किया गया था। हिदी न आने की वजह से दिव्या दत्ता ने अपनी आवाज दी थी। मगर उनकी परफॉर्मेंस इतनी दमदार थी कि वह रातोंरात स्टार बन गईं।

मगर 'कसूर' के बाद लीजा ने बॉलीवुड में बहुत ज्यादा फिल्में नहीं कीं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा और टेलीविजन में अपनी पहचान बनाई। दीपा मेहता की विवादास्पद फिल्म 'वाटर' (२००५) में उनकी भूमिका को समीक्षकों ने खूब सराहा। इस फिल्म ने उन्हें इंटरनेशनल लेवल पर पहचान दिलाई।

खास खबरें

महाराष्ट्र के गोंदिया में ५० से अधिक लोग पड़े बीमार, शादी समारोह में खाना खाने के बाद बिगड़ी तबीयत

गोंदिया : महाराष्ट्र में गोंदिया जिले के एक गांव में शादी समारोह में खाना खाने के बाद बच्चों समेत ५० से अधिक लोग बीमार पड़ गए और उनमें से कुछ को अस्पताल में भर्ती कराया गया . एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी.

अधिकारी के अनुसार प्रभावित लोगों का गोरेगांव तहसील के ग्रामीण अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और गोंदिया के एक निजी अस्पताल में इलाज किया जा रहा है. प्रभावित लोगों ने शनिवार को बाबई गांव में एक शादी समारोह में खाना खाया था.

गोरेगांव के ग्रामीण अस्पताल के चिकित्सा अधिकारी डॉ पी के पटले ने बताया कि शनिवार शाम ग्रामीण अपने बच्चों को पेट दर्द, उल्टी, दस्त आदि के चलते अस्पताल लेकर आए थे. उन्होंने कहा, ''हमने बच्चों समेत सभी मरीजों का इलाज किया. रविवार को चार मरीजों को छुट्टी दे दी गई, जबकि अन्य को निगरानी में रखा गया है और उनकी हालत स्थिर है.'' जिला परिषद के स्वास्थ्य विभाग ने स्थिति पर नजर रखने के लिए बाबई गांव में चिकित्सा शिविर लगाया.

ट्रैकिंग के दौरान भटके ७ दोस्त, रेस्क्यू टीम ने सुरक्षित बाहर निकाला

रायगढ़ : महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में पेब किले पर चढ़ाई के लिए गए ७ दोस्तों को रास्ता भटक जाने के बाद रविवार (६ अप्रैल) को पुलिस और एक स्थानीय समूह ने बचा लिया. स्थानीय प्रशासन के अधिकारी ने बताया कि मुंबई के पवई क्षेत्र से यह समूह महानगर से लगभग ८० किलोमीटर दूर नेरल के निकट ऐतिहासिक स्थल पर भ्रमण के लिए गया था. चढ़ाई करने वाले (ट्रेकर) के समूह में कुछ लड़कियां भी शामिल थीं.

मुंबई पुलिस अधिकारी ने बताया कि वन क्षेत्र से गुजरते समय चढ़ाई करने वाले ७ दोस्त रास्ते से भटक गए और कई घंटों तक उन्हें रास्ता नहीं मिल सका. उनमें से एक ने पुलिस से संपर्क किया. पुलिस और स्थानीय बचाव दल की एक टीम ने फिर उन्हें ढूंढ निकाला और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया.

छह साल की बच्ची का यौन शोषण और अत्याचार, लिव-इन में रहा प्रेमी गिरफ्तार

जालना : महाराष्ट्र के जालना में एक छह साल की बच्ची पर उसकी मां के प्रेमी द्वारा यौन शोषण और अत्याचार की चौंकाने वाली घटना सामने आई है. जालना पुलिस ने इस घटना के आरोपी को गिरफ्तार किया है. उसका नाम प्रशांत प्रकाश वाडेकर है. दरअसल, परभणी जिले के जिंतूर तहसील की रहने वाली २८ साल की एक महिला अपने पति से अलग होकर जूना जालना इलाके में किराए के कमरे में रह रही है. पहले पति से उसकी तीन बेटियां और एक बेटा है. इनमें से एक बेटा और एक बेटी उसके पति के साथ जिंतूर में रहते हैं.

महिला के पास एक ६ साल की और दूसरी ४ साल की बच्ची रहती हैं. महिला साफ-सफाई और घरेलू काम करके अपना और अपनी बेटियों का जीवन- यापन करती है. दो साल पहले उसकी मुलाकात एक होटल में मैनेजर के तौर पर काम करने वाले प्रशांत प्रकाश वाडेकर से हुई. इसके बाद से महिला और वाडेकर दो साल से किराए के कमरे में लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहे हैं. महिला काम के सिलसिले में दोपहर ३.३० बजे तक घर से बाहर रहती है, जबकि वाडेकर पूरे दिन घर पर रहकर शाम ७.३० बजे के बाद होटल में ड्यूटी पर जाता है.

हर बार की तरह रविवार को भी महिला काम के सिलसिले में घर से बाहर गई थी. तब प्रशांत वाडेकर ने उसकी ६ साल की बच्ची के साथ यौन शोषण और अत्याचार किया. घटना से घबराई बच्ची को तेज बुखार था और बहुत ज्यादा उल्टियां हो रही थीं.

वाडेकर के ड्यूटी पर जाने के बाद लड़की ने अपनी मां को अपने साथ हुई सारी बात बताई. उसने अपनी मां को बताया कि वाडेकर इसके पहले भी उसके साथ ऐसी गंदी हरकतें कर चुका था. इसके बाद महिला जालना पुलिस स्टेशन पहुंची और उसने प्रशांत वाडेकर के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई. पुलिस ने तुरंत आरोपी प्रशांत प्रकाश वाडेकर को हिरासत में ले लिया और यह केस पिक मोबाइल स्क्वॉड को सौंप दिया. इस बीच, जालना शहर में हुई इस दिल दहला देने वाली घटना से खलबली मच गई है.

महंगा होने के बाद मुंबई में अब कितने में मिलेगा एलपीजी सिलेंडर?

मुंई : केंद्र सरकार ने महंगाई का झटका दिया है. सोमवार (७ अप्रैल) को घरेलू सिलेंडर की कीमतों में ५० रुपये के बढ़ोतरी का ऐलान किया गया. नई कीमत मंगलवार से लागू होगी. इस समय मुंबई में ८०२ रुपये ५० पैसे प्रति सिलेंडर इसकी कीमत है. ऐसे में कीमत में बढ़ोतरी के बाद इसकी कीमत ८५२.५० हो जाएगी. उज्जवला योजना के सिलेंडर ५०० से बढ़ कर ५५० रुपये हो जाएंगे.

सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर दो रुपये प्रति लीटर एक्साइज ड्यूटी भी बढ़ाने का फैसला लिया है. हालांकि इससे आम लोगों की जेब पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा. पेट्रोल पर उत्पाद शुल्क बढ़ाकर १३ रुपये प्रति लीटर और डीजल पर १० रुपये प्रति लीटर कर दिया गया है.

मुंबई में एक लीटर डीजल की कीमत ९०.०३ रुपये है. वहीं एक लीटर पेट्रोल की कीमत १०३ रुपये ५० पैसे है. कांग्रेस के हमले पर केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी ने कहा कि जब वो सत्ता में थे तब उन्होंने ऑयल बांड लागू किया था जो हम अब तक चुका रहे हैं. आने वाले दिनों में कीमतें कम होंगी.

कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में हाल के दिनों में गिरावट देखी गई है. कच्चे तेल की कीमतें अप्रैल, २०२१ के बाद के सबसे निचले स्तर पर आ गई हैं. ऐसे में उम्मीद जताई जा रही थी कि सरकार कीमतों में कटौती करेगी, हालांकि एक्साइज ड्यूटी बढ़ने के बाद अब कटौती की उम्मीद खत्म हो गई है.

शिवसेना (यूबीटी) का निशाना

शिवसेना यूबीटी की सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि दुनियाभर में तेल के दामों ने भारी गिरावट देखी है, उम्मीद यह थी की देश की जनता को उसका लाभ मिलेगा और पेट्रोल/डीजल के दामों में छूट मिलेगी पर यह सरकार ने एक्साइज ड्यूटी बढ़ाकर अपना लूट लो मॉडल क़ायम रखा है! जय हो मोदी जी के मॉडल की !

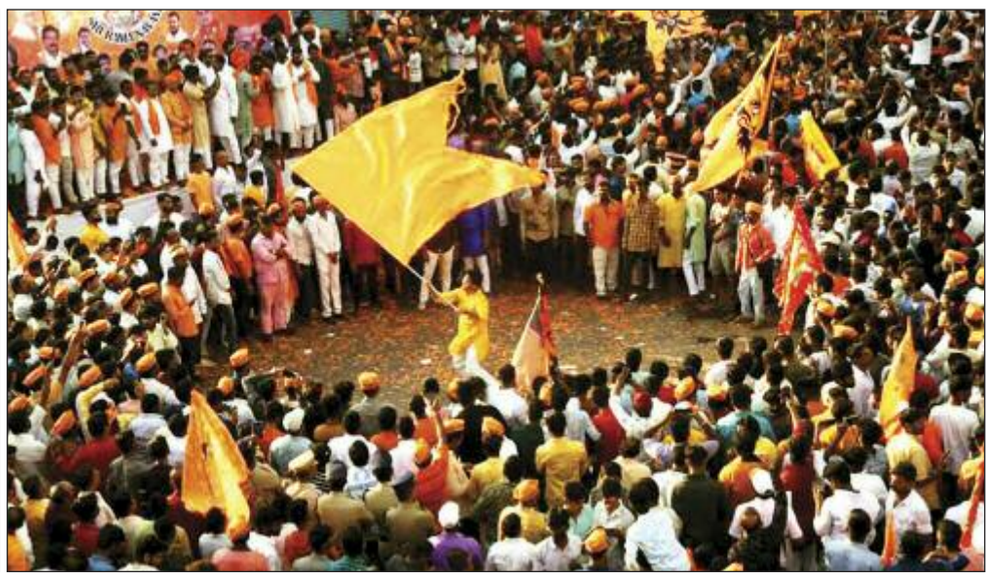

नागपुर में शांतीपूर्ण वातावरण में रामनवमी उत्सव

राममय वातावरण में निकली पोद्दारेश्वर राम मंदिर की शोभायात्रा

नागपुर : राम नाम की धून, शंखनाद, ढोल ताशा, मंगल ध्वज, नयनरम्य रासगरबा, शहनाई की मंगल स्वर आदी उल्हासित वातावरण में नागपुर के पोद्दारेश्वर मंदिर से भगवान श्रीराम की विधीवत पूजा, अर्चना के साथ नागपुर में बडे धूमधाम से राम नवमी मनाई गई. इस अवसर पर रथ पे सवार श्रीराम की उत्सव मूर्ती की केंद्रीय मंत्री नितीन गडकरी और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीसने श्रद्धापूर्वक पूजन किया।

इस पावन अवसर पर चंद्रशेखर बावनकुले, बनवारीलाल पुरोहित, डॉ. नितीन राऊत, कृपाल तुमाने, अनिस अहमद, प्रवीण दटके, आशिष देशमुख, अजय संचेती, अतुल कोटेचा और आदी गणमान्य भक्तगण उपस्थित थे।

हर साल की तरहा इस साल भी शोभा यात्रा का बडे धूमधाम से आयोजन किया गया। इस वर्ष ९० रामनवमी की शोभा यात्राएं शांतीपूर्ण वातावरण में निकाली गई।

रामनवमी पर इक्का दुक्का-विवाद की खबरें तो आई, लेकिन प्रभु राम के जन्मोत्सव पर देशभर में कई जगहों से भाईचारे की तस्वीरें भी सामने आईं. महाराष्ट्र के नागपुर और संभाजीनगर में रामनवमी पर जो शोभायात्रा निकली थी, उसमें मुस्लिम सेवा समिति के लोगों ने पूरे जोशोखरोश के साथ शिरकत की. यात्रा में शामिल लोगों के सम्मान के साथ मुस्लिम सेवा समिति के लोगों ने जलसेवा भी की.

इस दौरान जगह जगह शोभा यात्राएं निकाली गईं. नागपुर के हिंसा प्रभावित इलाके में भी आज शांतीपूर्ण माहौल मे रामनवमी की शोभायात्रा निकली.

पोद्दारेश्वर राम मंदिर से जुलूस निकाला गया. पुलिस ने संवेदनशील इलाकों में रूट मार्च किया गया और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए थे. एसआरपीएफ, रेपिड एक्शन फोर्स, और क्राइम ब्रांच की टीमें तैनात की गई थी. ड्रोन से निगरानी रखी और कुछ रूटों को डाइवर्ट किया गया था.

मुस्लिम सेवा समिति से जुड़े एक शख्स ने कहा, "नागपुर शहर भाईचारे का प्रतीक है और आज हमारा मकसद भाईचारे का संदेश देना है. जिस तरह ईद ए मिलादुन्नबी पर हमारे हिंदू भाई स्टॉल लगाकर हमारा स्वागत करते हैं प्रेम और भाईचारे का संदेश देते हैं उसी तरह हम मोमिनपुरा से हिंदू भाइयों का फूलों से स्वागत करके एकता का संदेश के लिए आए हैं."

वही महाराष्ट्र के पालघर जिले के विरार पश्चिम में राम नवमी के अवसर पर आयोजित शोभायात्रा के दौरान तनाव की स्थिति बन गई. रविवार, ६ अप्रैल को ग्लोबल सिटी स्थित हनुमान मंदिर से निकली इस यात्रा के दौरान एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा अंडा फेंके जाने का आरोप सामने आया है.

मिली जानकारी के अनुसार, शोभायात्रा के दौरान कुछ राम भक्त शॉर्टकट रास्ते से जा रहे थे. रामनवमी शोभ यात्रा में लगभग १०० से १५० मोटरसाइकिलें, एक रथ और दो टेम्पो शामिल थे उसी समय उनके ऊपर कथित रूप से अचानक एक अंडा गिरा.

ऐसा माना जा रहा है कि यह अंडा जानबूझकर फेंका गया है, जिससे माहौल कुछ समय के लिए तनावपूर्ण हो गया. घटना के बाद लोगों में असंतोष और नाराजगी देखी गई, जिससे स्थिति संवेदनशील हो गई.

पुलिस ने संभाली स्थिती

स्थिति को बिगड़ने से पहले ही बोर्लीज पुलिस ने तुरंत हस्तक्षेप किया. पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और राम भक्तों को समझा-बुझाकर मामला शांत कराया. उनकी सक्रियता और सूझबूझ से तनाव जल्द ही खत्म हो गया और यात्रा को आगे बढ़ाया गया. स्थानीय नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी समझदारी से भूमिका निभाई और शांति बनाए रखने की अपील की. इस घटना के संबंध में बोर्लीज पुलिस थाने में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ भारतीय न्यान संहिता की धारा १९६ के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है. पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आरोपी की तलाश जारी है. पुलिस द्वारा सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं और स्थानीय लोगों से भी पूछताछ की जा रही है.

सुबह से इलाके में पूरी तरह शांति है और जनजीवन सामान्य हो चुका है. स्थानीय प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें और शांति बनाए रखें. इस तरह पुलिस की तत्परता, स्थानीय लोगों के सहयोग और प्रशासन की सजगता से एक संभावित विवाद टल गया और राम नवमी का पर्व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ.

एकनाथ शिंदे पर 'गद्दार' वाली टिप्पणी मामले में कुणाल कामरा ने उठाया बड़ा कदम

बॉम्बे हाईकोर्ट से लगाई ये गुहार

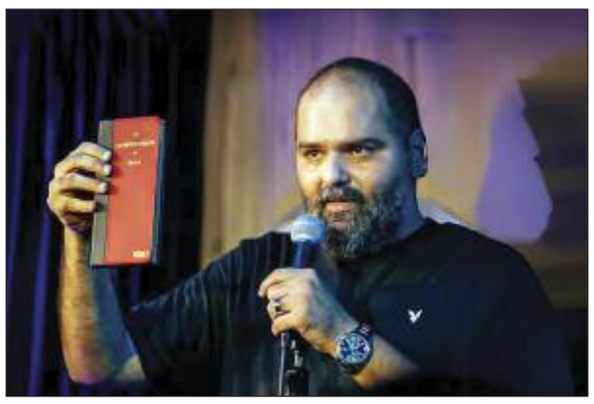

मुंबई : स्टैंड-अप कॉमेडियन कुणाल कामरा ने अपने खिलाफ दर्ज एफआईआर रद्द करने की मांग को लेकर शनिवार (5 अप्रैल) को बॉम्बे हाईकोर्ट में याचिका दायर की है. महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के खिलाफ एक कथित आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर यह मामला दर्ज किया गया है, जो उन्होंने एक कॉमेडी शो के दौरान की थी.

हाईकोर्ट की वेबसाइट के अनुसार, कामरा ने 5 अप्रैल को एफआईआर को रद्द करने की मांग करते हुए एक याचिका दायर की, जिसमें दावा किया गया कि यह कार्रवाई संविधान के तहत अनुच्छेद 19 (1) (ए) (भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार), 19 (1) (जी) (किसी भी पेशे और व्यवसाय का अभ्यास करने का अधिकार) और 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) के तहत गारंटीकृत उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है.

21 अप्रैल को होगी सुनवाई

हाईकोर्ट की वेबसाइट के अनुसार, यह मामला 21 अप्रैल को न्यायमूर्ति सारंग वी. कोतवाल और श्रीराम एम. मोडक की पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध है. कामरा को मुंबई पुलिस द्वारा तीसरी बार समन भेजा गया था, लेकिन वह शनिवार को भी पेश नहीं हुए.

शिवसेना विधायक मुरजी पटेल की शिकायत पर 24 मार्च को MIDC पुलिस स्टेशन ने कामरा के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 353(1)(b), 353(2) (सार्वजनिक उपद्रव फैलाने वाले बयान) और 356(2) (मानहानि) के तहत मामला दर्ज किया था. बाद में यह जीरो FIR खार पुलिस स्टेशन को ट्रांसफर कर दी गई.

शिकायत में आरोप लगाया गया है कि कामरा ने खार स्थित हैबिटैट स्टूडियो में एक शो के दौरान एकनाथ शिंदे की नैतिक छवि पर सवाल उठाते हुए अपमानजनक टिप्पणी की, जिससे न केवल शिदे की छवि धूमिल हुई बल्कि दो राजनीतिक दलों के बीच शत्रुता भी बढ़ी.

मद्रास हाई कोर्ट ने दी थी अंतरिम अग्रिम जमानत

इससे पहले, मद्रास हाई कोर्ट ने कामरा को मुंबई में दर्ज इसी मामले में 7 अप्रैल तक अंतरिम अग्रिम जमानत दी थी. कामरा ने यह कहते हुए मद्रास हाईकोर्ट का रुख किया था कि वह तमिलनाडु के उत्तरी जिले के स्थायी निवासी हैं और महाराष्ट्र यात्रा के दौरान उन्हें गिरफ्तारी या शारीरिक क्षति का खतरा है.

उन्होंने कोर्ट में यह भी दलील दी कि उनके खिलाफ की गई शिकायत राजनीतिक रूप से प्रेरित है और वीडियो अपलोड के बाद हुई तोड़फोड़ इस बात का प्रमाण है कि FIR दुर्भावनापूर्ण इरादों से की गई है.

बीजेपी नेता किरीट सोमैया को मिली जान से मारने की धमकी

मुंबई : बीजेपी नेता किरीट सोमैया ने हाल ही में अवैध लाउडस्पीकरों के खिलाफ मुंबई के शिवाजी नगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कार्रवाई थी, जिसके बाद उन्हें जान से मारने की धमकी मिली थी. इस मामले में मुंबई पुलिस ने यूसुफ उमर अंसारी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा ३५१(२) के तहत गैर-न्यायिक शिकायत दर्ज की है.

बीजेपी के जिलाध्यक्ष दीपक दलवी ने एक प्रतिनिधिमंडल के साथ नवघर पुलिस स्टेशन, मुलुंड (पूर्व) पहुंचकर यह शिकायत दर्ज कराई. उन्होंने आरोप लगाया कि सोमैया को अवैध मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकरों के खिलाफ आवाज उठाने पर जान से मारने की धमकी दी गई.

किरीट सोमैया ने यूसुफ उमर अंसारी को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता जितेंद्र अव्हाड और समाजवादी पार्टी नेता अबु आजमी का करीबी बताया है. सोमैया का कहना है कि उन्होंने ५ अप्रैल को गोवंडी स्थित शिवाजी नगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई थी, जिसमें बताया था कि मुंबई के ७२ मस्जिदों पर अवैध रूप से लाउडस्पीकर लगाए गए हैं.

सोमैया ने कहा, "मुंबई पुलिस ने मेरी शिकायत स्वीकार की है और हमने मांग की है कि इन अवैध लाउडस्पीकरों पर कार्रवाई की जाए. लेकिन, अब मुझे घर में घुसकर जान से मारने की धमकी मिल रही है, जो लोग धमकी दे रहे हैं, उनके पीछे जो गॉडफादर हैं, उनसे मैं कहना चाहता हूं कि जैसे लैंड जिहाद के तहत बनी अवैध मस्जिदों पर कार्रवाई हुई, वैसे ही ये अवैध लाउडस्पीकर भी हटाए जाएंगे."

उन्होंने आगे कहा कि मुंबई में हाई कोर्ट के आदेशों की अनदेखी करते हुए लाउडस्पीकर बजाना अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. बीजेपी की ओर से इस मुद्दे को गंभीरता से लिया गया है और पुलिस से कड़ी कार्रवाई की मांग की गई है.

गौरतलब है कि औरंगजेब का मामला अभी थमा नहीं था कि एक और मामला महाराष्ट्र में धार्मिक और राजनीतिक तनाव का मोड़ बनता दिख रहा है. पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई और आने वाले दिनों में इस पर होने वाली राजनीतिक प्रतिक्रिया पर सबकी नजर टिकी है.

वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो रहा भारत

नई दिल्ली : पर्यटनमंत्रालय ने २०१४-१५ में स्वदेश दर्शन योजना शुरू की थी जिसका उद्देश्यचिन्हित विषयगत सर्किटों के अंतर्गत पर्यटन सुविधाओं का विकास करना था औरदेश में ५२८७.९० करोड़ रुपये की लागत से ७६ परियोजनाओं को मंजूरी दी थी।मंत्रालय ने और जिम्मेदार पर्यटन स्थलों को विकसित करने के उद्देश्यसे स्वदेश दर्शन योजना को स्वदेश दर्शन २.० (एसडी २.०) के रूप में नया रूपदिया और एसडी २.० के तहत ७९१.२५ करोड़ रुपये की लागत से ३४ परियोजनाओं कोमंजूरी दी है।

पर्यटनमंत्रालय देश के प्रमुख और कम ज्ञात पर्यटन स्थलों तक और हवाई संपर्कसहित सुधार करने के लिए नियमित रूप से संबंधित मंत्रालयों और राज्यसरकारों के साथ समन्वय करता है।

मंत्रालयने देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सुंदरता और विविध आकर्षणोंकी खोज मंस रुचि रखने वाले यात्रियों और हितधारकों के लिए एक व्यापकसंसाधन के रूप में २७ सितंबर, २०२४ को भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म का नया संस्करण लॉन्च किया है। आईआईडीपी की नई विशेषताओं में सेएक अतुल्य भारत सामग्री हब है - एक व्यापक डिजिटल भंडार, जिसमें भारत मेंपर्यटन से संबंधित उच्च गुणवत्ता वाली छवियों, फिल्मों, ब्रोशर और समाचारपत्रों का समृद्ध संग्रह है।

यह भंडार विभिन्न प्रकार के हितधारकों के लिए है, जिसमें टूर ऑपरेटर, पत्रकार, छात्र, शोधकर्ता, फिल्मनिर्माता, लेखक, प्रभावित करने वाले, सामग्री निर्माता आदि शामिल हैं। आईआईडीपी समकालीन मौसम अपडेट, शहर की खोज और आवश्यक यात्रा सेवाएं प्रदानकरके व्यक्तिगत आगंतुक अनुभव प्रदान करेगा।

यह जानकारी केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री गजेन्द्र सह शेखावत ने राज्य सभा एक लिखित उत्तर में दी।

'वक्फ बिल का हिंदुत्व से क्या संबंध?'

उद्धव ठाकरे के सांसद संजय राउत ने बीजेपी से किया सवाल

मुंबई : राष्ट्रपति की मुहर के बाद वक्फ संशोधन बिल अब कानून बन गया है. हालांकि, इसका विरोध करने वाले राजनीतिक दल संतुष्ट नहीं हैं. इसी क्रम में उद्धव ठाकरे की शिवसेना यूबीटी ने एक बार फिर आपत्ति दर्ज की है. उद्धव गुट के सांसद संजय राउत ने पार्टी के मुखपत्र सामना में वक्फ बिल को लेकर एक आर्टिकल लिखा है, जिसमें उन्होंने केंद्र सरकार पर निशाना साधा है.

सामना संपादकीय में दावा किया गया है, "वक्फ बिल और हिंदुत्व का कोई संबंध नहीं है. वक्फ संशोधन विधेयक का हिंदुत्व से क्या संबंध है? मुसलमानों की संपत्ति पर सरकारी नियंत्रण लाने के लिए मोदी सरकार ने यह विधेयक लाया. यह सीधे तौर पर प्रॉपर्टी वॉर है. इसमें हिंदू-मुसलमान का मुद्दा कहां है?"

नीतीश कुमार और चिराग पासवान पर भी निशाना

सामना संपादकीय में लिखा गया, "वक्फ बोर्ड के पास लगभग सवा दो लाख करोड़ रुपये की संपत्ति है, जिसमें मौके की जमीनें हैं. जगह-जगह हिंदू-मुसलमानों के बीच नफरत भड़काई जा रही है और फिर अपना काम साधा जा रहा है. राम मंदिर, हिंदुत्व की तीखी आलोचना करने वाले नीतीश कुमार, पासवान उस बाजार में मौजूद हैं."

संजय राउत ने बड़ा आरोप लगाते हुए कहा, "बीजेपी ने यह विधेयक वक्फ की इफरात संपत्ति को देखते हुए लाया है. समाज सुधार, जनसेवा, गरीब मुसलमानों का हित वगैरह झूठ है."

सामना संपादकीय में लिखा गया, "महत्वपूर्ण बात यह है कि आप कितनी मस्जिदों और प्राचीन इमारतों की खुदाई करेंगे? ३० हजार मस्जिदें हैं. उन्हें खोदेंगे? इतिहास बदलने के लिए यह प्रयोग क्यों? इतिहास को कितना पीछे ले जाओगे?"

संजय राउत ने फिर आरएसएस का किया जिक्र

वहीं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जिक्र करते हुए संजय राउत ने लिखा, "संघ ने मोदी के बेलगाम घोड़े की लगाम को कसने का काम किया है. यह कहना गलत है कि मोदी इतने ताकतवर हो गए हैं कि संघ के पास उनसे लड़ने की ताकत नहीं है. संघ को ईडी, सीबीआई, पुलिस का भय नहीं है. इसलिए संघ, एक विशाल संस्था मोदी से नहीं डरेगी."

दरअसल, संघ को लेकर यह बात संजय राउत ने इसलिए कही क्योंकि संघ के पूर्व मुख्य कार्यवाह ने कहा था, 'औरंगजेब की कब्र खोदने की जरूरत क्या है? ये हिंदुत्व नहीं है. औरंगजेब की मौत महाराष्ट्र में हुई इसलिए उसकी कब्र महाराष्ट्र में है. औरंगजेब की कब्र कोई संघ का एजेंडा नहीं है.' ऐसे में संजय राउत ने कहा कि हिंदुत्व के मुद्दे पर अनावश्यक निरर्थक काम होने की बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जाहिर की है. संघ के अगले कदम महत्वपूर्ण नजर आ रहे हैं.

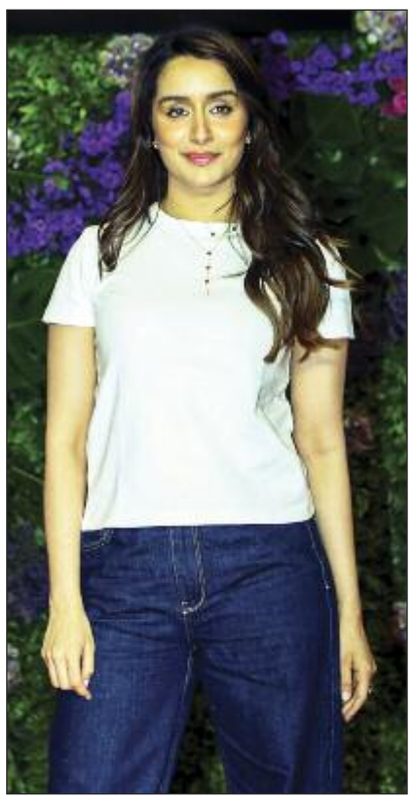

मुंबई में सोमवार, ७ अप्रैल को आयोजित फिल्म निर्माता दिनेश विजान के प्रोडक्शन हाउस मैडॉक फिल्म्स की सक्सेस पार्टी के दौरान अभिनेत्री डिंपल कपाड़िया और नाओमिका सरन पोज़ देते हुए। इस पार्टी दौरान बाएं से अभिनेत्री निमरत कौर, अभिनेता इब्राहिम अली खान और सारा अली खान, अभिनेत्री श्रद्धा कपूर और अभिनेत्री रश्मिका मंदाना के साथ अन्य कलाकारों ने अपनी उपस्थिती दर्ज की

सपा तैयार कर रही नई सियासी जमीन, जहां पीडीए ही नहीं...

अगड़े वर्ग के लिए भी खोला खजाना

आगरा : पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (पीडीए) की राजनीतिक जमीन तैयार करने के लिए समाजवादी पार्टी अपराध पीड़ितों के आंसू पोछ रही है। आर्थिक सहयोग से उनके जख्मों पर मरहम लगा रही है। इसके लिए पार्टी ने खजाना खोल रखा है जबकि अन्य दल सिर्फ संवेदनाएं व्यक्त करने तक सीमित हैं।

सिर्फ पीडीए ही नहीं, अगड़े वर्ग के पीड़ितों के लिए भी सपा मदद को हाथ बढ़ा रही है। पिछले एक साल में करीब ३१ लाख रुपये की सहयोग राशि बांटी गई है। डौकी स्थित कबीस चौकी पर पुलिस हिरासत में पीड़ित परिवार को एक लाख रुपये की मदद की गई। एत्मादपुर के रूपधनु में पुलिस उत्पीड़न से तंग आकर सिकरवार भाइयों ने आत्महत्या की। आश्रितों को सपा ने एक-एक लाख रुपये की मदद मुहैया कराई।

पार्टी ने हाथरस भगदड़ कांड में मारे गए आगरा के १७ लोगों को एक-एक लाख रुपये के हिसाब से १७ लाख रुपये बांटे। इसके अलावा जगदीशपुरा थाना में पुलिस हिरासत में दम तोड़ने वाले वाल्मीकि परिवार को १० लाख रुपये की आर्थिक सहायता की। इसके अलावा एत्मादपुर में तिरंगा झंडा फहराते समय छत गिरकर दम तोड़ने वाले मुस्लिम बच्चे के परिवार को भी एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी।

संवेदनशील हैं अखिलेश

सपा के महानगर अध्यक्ष चौधरी वाजिद निसार ने कहा कि अपराध पीड़ितों को लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव संवेदनशील हैं। जहां भी जुल्म होता है, वो उनके साथ खड़े हो जाते हैं।

नहीं देखते जाति और धर्म

सपा के जिलाध्यक्ष श्रीकृष्ण वर्मा निषाद ने बताया कि पीड़ित कोई भी हो। अगर उसके साथ ज्यादती होती है तो समाजवादी पार्टी उनके हक की आवाज उठाती है। हम जाति और धर्म देखकर राजनीति नहीं करते।

महिलाओं सम्मान सुरक्षित

सपा महिला सभा की महानगर अध्यक्ष प्रियंका चौहान ने बताया कि सपा में महिलाओं का सम्मान सुरक्षित है। पार्टी नेतृत्व भी इस बात को लेकर गंभीर है। महिला अपराधों को लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष मुखर रहते हैं।

कोयला उत्पादन १ बीटी के पार

नई दिल्ली : भारत ने कोयला उत्पादन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, जो वित्त वर्ष २०२४-२५ में २० मार्च, २०२५ को एक बिलियन टन को पार कर गया। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि पिछले वित्त वर्ष के ९९७.८३ मिलियन टन (एमटी) कोयला उत्पादन से ११ दिन पहले प्राप्त की गई है, जो भारत की अपनी ऊर्जा मांगों को सुनिश्चित करने और औद्योगिक, कृषि और समग्र आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण प्रगति को चिन्हित करती है।

कोयला क्षेत्र की प्रगति का श्रेय कोयला क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों (पीएसयू), निजी क्षेत्र के दिग्गजों और ३५० से अधिक कोयला खदानों में कार्यरत लगभग ५ लाख खदान श्रमिकों के अथक प्रयासों को जाता है। इन कोयला खनिकों ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिन्होंने बेजोड़ समर्पण के साथ चुनौतियों का सामना किया है।

भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकता के लगभग ५५ प्रतिशत के लिए कोयले पर निर्भर है, और देश की लगभग ७४ प्रतिशत बिजली कोयला आधारित बिजली संयंत्रों द्वारा उत्पन्न की जाती है। यह भारत की अर्थव्यवस्था को शक्ति प्रदान करने और ऊर्जा सुरक्षा को बनाएं रखने में कोयले के अभूतपूर्व योगदान को चिन्हित करता है।

संजय निरुपम ने उद्धव ठाकरे को बताया 'मुस्लिम हृदय सम्राट'

मुंबई : वक्फ कानून को लेकर शिवसेना एकनाथ शिदे गुट के नेता संजय निरुपम शिवसेना यूबीटी समेत विपक्ष पर हमलावर हैं. जहां पहले उन्होंने उद्धव ठाकरे को लेकर दावा किया वहीं मुसलमानों के खिलाफ भी विवादित बयान दे डाला. वहीं एक बार संजय निरुपम ने शिवसेना यूबीटी और कांग्रेस को घेरते हुए मुस्लिम समुदाय पर गंभीर आरोप लगाए हैं.

संजय निरुपम ने रविवार (६ अप्रैल) को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा, "महाराष्ट्र सरकार की तरफ से एक रिपोर्ट बननी चाहिए, ९० हजार एकड़ से ज्यादा जमीन वक्फ के पास है यह सबको पता होना चाहिए. कांग्रेस वालों ने इन जमीनों पर अवैध कब्जा कर रखा है, इस बात को उजागर करना चाहिए. कई बिजनेस करने वाले मौलानाओं ने कब्जा कर रखा है उसकी जांच होनी चाहिए."

'मुस्लिम संगठनों से मिल रहा पैसा'

उन्होंने आगे कहा, "शिवसेना यूबीटी ने वक्फ के खिलाफ अपनी भूमिका रखी तक राजसभा में यूबीटी वाले तिलमिला गए और संजय राउत ने नीचे स्तर पर जाकर प्रफुल पटेल को दलाल और दाऊद का आदमी बताया. सच तो यह है कि वक्फ के बाद उद्धव की पार्टी और संजय राउत का स्तर काफी गिर गया है और मुझे लगता है अब संजय राउत को इस बात का एहसास हो गया है कि उन्होंने गलत भूमिका ले ली है. चंद मुस्लिम वोटों के लिए समझौता किया है मुस्लिम संगठन से पैसा मिल रहा है उसके लिए इन्होंने यह किया है."

वहीं रामनवमी को लेकर संजय निरुपम ने कहा, "बहुत ही शर्मनाक बात है, जब पूरे देश का हिंदू राम का जन्म मनाएगा तो कुछ जिहादी प्रवृति के मुस्लमान जानबूझकर माहौल खराब करते है इसलिए सरकार को आकर अलर्ट लगाना पड़ रहा है. हिंदू त्यौहार पर अलर्ट रखना शर्म की बात है दुर्भाग्यपूर्ण है, हिंदुस्तान में हिंदुओं को अपनी शोभा यात्रा निकालने के लिए कोर्ट जाना पड़ता है."

'मुसलमानों के मसीहा बन गए उद्धव ठाकरे'

उन्होंने आगे कहा, सेक्यूलर लोगों के चलते पश्चिम बंगाल की राजनीति चलती है, वहां हिंदुओं को प्रताड़ित किया जा रहा है. उद्धव ठाकरे भी ममता बनर्जी के नक्शे कदम पर चल रहे है, महाराष्ट्र के ममता बनर्जी हो गए है. मुसलमानों का नया मसीहा बन गए हैं, मुस्लिम हृदय सम्राट बन गए हैं."

'अब बिखरेगी एमवीए'

निरुपम ने दावा किया कि शरद पवार देश के वरिष्ठ नेता हैं उन्हें पता है सही क्या है और गलत क्या है. इसलिए उनको सांसदों ने वक्फ के समर्थन में वोट दिया. वो जानते है वक्फ के नाम पर धंधा चल रहा है, इसलिए शरद पवार ने इस बिल के पक्ष में अपनी भूमिका रखी है. शरद पवार की इस भूमिका के बाद एमवीए बिखरेगी.

जैव प्रबलित फसलों का हो रहा विकास

नई दिल्ली : वर्ष २०१४-२०२४ के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के तत्वावधान में आईसीएआर संस्थानों और राज्य/केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालयों (सीएयू/एसएयू) सहित राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) ने २९०० स्थान-विशिष्ट उन्नत क्षेत्र फसल किस्में/संकर विकसित की हैं, जिनमें अनाज की १३८०, तिलहन की ४१२, दलहन की ४३७, फसलों की ३७६, चारा फसलों की १७८, गन्ने की ८८ और अन्य फसलों की २९ किस्में शामिल हैं। इन २९०० किस्मों में से २६६१ किस्में (अनाज १२५८; तिलहन ३६८; दालें ४१०; फाइबर फसलें ३५८; चारा फसलें १५७, गन्ना ८८ और अन्य फसलें २२) एक या अधिक जैविक और/या अजैविक के प्रति सहनशील हैं। इनमें से ५३७ किस्मों को सटीक फेनोटाइपग उपकरणों का उपयोग करके विशेष रूप से चरम जलवायु के लिए विकसित किया गया है। इस अवधि के दौरान चावल (१४), गेहूं (५३), मक्का (२४), मोटे अनाज (२६), तिलहन (२१), दालें (९) और अनाज चौलाई (५) की १५२ प्रबलित किस्में जारी की गई हैं। इसी प्रकार, बागवानी फसलों में, पिछले दस वर्षों(२०१४-२०२४) के दौरान, कुल ८१९ किस्मों को जारी और अधिसूचित किया गया है, जिनमें बारहमासी मसाले (६०), बीज मसाले (४९), आलू और उष्णकटिबंधीय कंद फसलें (७१), बागान फसलें (२६), फल फसलें (१२३), सब्जी फसलें (४२९), फूल अन्य सजावटी पौधे (५३) तथा औषधीय और सुगंधित पौधे (८) शामिल हैं; जिनमें से १९ जैव प्रबलित किस्में हैं।

विभिन्न एजेंसियों से प्राप्त मांगों के अनुसार, इनकिस्मों के प्रजनक और गुणवत्ता वाले बीजों का उत्पादन करने के लिएव्यवस्थित प्रयास किए गए हैं। किसानों को बीज की शीघ्र आपूर्ति के रबी २०२४-२५ से पर्याप्त मात्रा में प्रजनक बीज उत्पादन और खरीफ २०२५ के लिए प्रसंस्करण की योजना बनाई गई है। सभी प्रजनक बीज उत्पादन/किस्म विकास केंद्रों को निर्देश दिया गया है कि वे उपलब्ध प्रजनक/स्टॉक बीज को राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड (एनएससीएल), राज्य बीज निगमों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, क्षेत्र, एफपीओऔर अन्य एजेंसियों जैसी बीज उत्पादन एजेंसियों के साथ साझा करें ताकिकिसानों को इन किस्मों के बीज उपलब्ध कराने के लिए आधार और प्रमाणित बीजोंका तेजी से गुणन किया जा सके। तेजी से गुणन के लिए कृषक सहभागी बीज उत्पादनकार्यक्रम के माध्यम से किसानों के खेतों पर भी उत्पादन किया जाता है। बीज उत्पादन एजेंसियों और किसानों के बीच इन किस्मों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए दूरदर्शन के चैनलों, ऑल इंडिया रेडियो, प्रट, इलेक्ट्रॉनिकऔर सोशल मीडिया के माध्यम से हर संभव प्रयास किए जाते हैं।

यूक्रेन यूरोप एवं ट्रंप

नई दिल्ली : यूक्रेन मोर्चे पर अंतिम समाचार यह है कि ब्रिटेन फ्रांस और यूक्रेन ने मिलकर एक युद्धविराम योजना बनाई है जिसे अमेरिका के सामने प्रस्तुत किया जाएगा। ब्रिटिश प्रधानमंत्री केअर स्टोर्मर की बात मानें तो इस पर लगभग सहमति बन गई है। युद्ध समाप्ती पर चर्चा के लिए यूरोपीय नेताओं के साथ २ मार्च को शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस शिखर सम्मेलन में फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, इटली, नीदरलैंड, नॉर्वे, पोलैंड, स्पेन, कनाडा, फिनलैंड, स्वीडन, चेक गणराज और रोमानिया के नेता के अलावा तुर्किये के विदेश मंत्री, नाटो महासचिव तथा यूरोपीय आयोग यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष ने भाग लिया।

विश्व की दृष्टि से यह यूरोप का संपूर्ण सशक्त शिखर सम्मेलन था। विश्व ने देखा कि किस तरह यूरोपीय नेताओं ने वोलिदिमीर जेलेंस्की की आवभगत की तथा उन्हें महत्व दिया। ओवल ऑफिस यानी अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय से निकलने के बाद जेलेंस्की सीधे आए और प्रधानमंत्री स्टोर्मर ने उन्हें गले लगाया और कहा कि उन्हें उनके देश का अटूट समर्थन प्राप्त है तो इसके पीछे तत्काल ट्रंप एवं दुनिया को एक संदेश देने की रणनीति है। वास्तव में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जिस ढंग से यूक्रेन पर अपने तेवर दिखाए और फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल मैक्रो के साथ उनकी बहस हुई तथा यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलस्की को व्हाइट हाउस से बाहर किया गया वह दुनिया में सबसे बड़ी हलचल मचाने वाली घटना बन गई। अमेरिकी इतिहास की यह पहली घटना थी जब व्हाइट हाउस में दो नेताओं के बीच इस पर बहस हुई, दोनों उंगली उठाते दिखे तथा किसी विदेशी मेहमान को वहां से बाहर निकालना पड़ा। प्रश्न है की अभी आगे होगा क्या?

ऐसा दिख रहा है कि यूरोप के ज्यादातर नेता इस समय जेलेंस्की के साथ है। हालांकि वर्तमान यूरोपीय नेता अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में उथल-पुथल के परिणाम से आशंकित है और वे संतुलित आचरण की कोशिश कर रहे हैं। ब्रिटिश प्रधानमंत्री स्टार्मर ने सधे हुए वक्तव्य में कहा कि अब हम इस बात पर सहमत हो गए हैं कि ब्रिटेन, फ्रांस और संभवतः एक या दो अन्य देशों के साथ मिलकर यूक्रेन के साथ लड़ाई रोकने की योजना पर काम किया जाएगा और फिर उस पर अमेरिका के साथ चर्चा करेंगे। स्टार्मर ने कहा कि उन्हें व्लादिमीर पुतिन पर विश्वास नहीं है लेकिन डोनाल्ड ट्रंप पर विश्वास है और वह जब कहते हैं कि उन्हें शांति चाहिए तो हम मांग कर चलते हैं कि वह यही चाहते हैं। तो दो मत नहीं कि कोई समझौता स्थाई शांति की गारंटी होनी चाहिए। इसलिए स्टार्मर अगर कह रहे हैं कि हम अस्थाई युद्ध विराम का जोखिम नहीं ले सकते तो सामान्य तौर पर इससे असहमत होना कठिन है। उनका यह कहना कि युद्ध समाप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं आकर्षित करता है कतु स्वयं इस समय की अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में देश की भूमिका ही इसके मार्ग की बड़ी बाधा है। एक बड़े समूह को डोनाल्ड ट्रंप का व्यवहार अटपटा और एकपक्षीय लग सकता है। धीरे-धीरे विश्व में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ी है जो मानते हैं कि उनका व्यवहार ठीक नहीं है। एक समय यूक्रेन के प्रति विश्व की सहानुभूति थी और यह सच है कि अमेरिका और यूरोप की मदद के कारण पुतिन की युद्ध योजना पर तुषारापात हुआ। यूक्रेन जैसे छोटे देश को घुटनों पर लाना उनके लिए कठिन हो गया। कतु पूरे काला सागर सहित क्रीमिया क्षेत्र को देखें तो वहां लंबे समय से यूरोप की भूमिका के कारण ही स्थिति इतनी जटिल है कि उनका स्थाई निपटारा संभव नहीं। सोवियत संघ जिन राज्यों को मिलकर बना उनमें ज्यादातर आज स्वतंत्र हैं, पर उनकी भौगोलिक सीमाएं खासकर समुद्र में और आसपास इतनी स्पष्ट नहीं।

न भूलिए कि प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय युद्ध विश्व युद्ध के पीछे उसे क्षेत्र की भौगोलिक जटिलताएं और राजनीतिक व्यवहार की बड़ी भूमिका थी। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बावजूद अमेरिका के समक्ष सोवियत संघ के दूसरी महाशक्ति के रूप में खड़ा होने के कारण थोड़ा संतुलन तथा यूरोप के प्रमुख देशों ने आपस में भौगोलिक जटिलताएं खत्म की, राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं पर लगाम लगाई। बावजूद न संपूर्ण यूरोप के लिए और न विश्व के लिए अस्थाई सुरक्षा और शांति सुनिश्चित हुई। सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो और उसकी सेना कायम रही। अमेरिका और यूरोपीय देश यूक्रेन को नाटो का सदस्य बनाने की ओर कदम आगे नहीं बढ़ते तथा उसे शास्त्रास्त्र नहीं देते तो पुतिन के लिए इस तरह आक्रमण करने का आधार नहीं बनता। इन देशों ने पोलैंड के साथ भी यही किया। शेष विषयों को छोड़ दें तो यूक्रेन राष्ट्रपति जेलेस्की यह घोषणा कर देते कि वह नाटो का सदस्य नहीं बनेंगे तो भी शायद स्थिति इतनी बिगड़ती नहीं।

सच यह है कि यूक्रेन रूस युद्ध विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर चुका है। नहीं रुका तो दुनिया कई प्रकार के संघर्षों में उलझ जाएगी। कई बार आपको शांति लिए दबाव और अन्य बाध्यकारी दबावकारी कड़े भी कदम उठाने पड़ते हैं। ऐसा लग रहा है कि रूस यूक्रेन युद्ध को रोकने के लिए ढी ट्रंप ने इस स्तर कड़ा रुख अपनाया है। अगर ट्रंप तेवर करार नहीं किया होता तथा अपने चरित्र के अनुसार छोड़ना से खरी-खरी नहीं नहीं होते तो न यूरोपीय देश बैठते और न नए सिरे से विचार होता। जेलेंस्की को भी अमेरिका के महत्व का पता है और उन्होंने कहा है कि वह खनिज पर समझौते के लिए फिर से व्हाइट हाउस जाने को तैयार हैं। लेकिन उन्हें सुरक्षा की गारंटी चाहिए। जेलेंस्की के इतिहास को ठीक से देखें। कोई देश किसी की सुरक्षा की स्थाई गारंटी नहीं दे सकता। इस समय उन्हें गारंटी दी जा सकती है। बस, वे स्वयं को भी बड़ी सैन्य शक्ति बनने या ऐसी अन्य महत्वाकांक्षाओं से अलग रखें। यूरोपीय देशों को भी समझना होगा कि पहले की यूक्रेन की सैन्य और कूटनीतिक मदद जारी रखकर वे कुछ समय तक आर्थिक लाभ पा सकते हैं, रुस और उसे भी दबाव में रह सकता है लेकिन यह विश्व को बड़े संकट में फंसाने वाला भी साबित होगा। ट्रंप के रुख और रणनीति से ऐसा लगता नहीं कि वे से शांत होंगे। वैसे वर्तमान विश्व में अमेरिका का राष्ट्रपति युद्ध रोकने की बात करते हुए इसी तरह का कड़ा तेवर बनाए रखेगा तभी इसका कोई समाधान निकलेगा। इस दृष्टि से देखें तो ट्रंप का रवैया कम से कम तत्काल विश्व युद्ध रोकने वाला भी दिखेगा।

वर्तमान विश्व में एक देश आदर्शवादी या राष्ट्रीय स्वार्थ से परे होकर व्यवहार करने की स्थिति में है ही नहीं। तो हम अमेरिका से ही इसकी अपेक्षा क्यों रखें? ऐसा नहीं है कि यूरोप को यह बात समझ में नहीं आ रही हो। स्वयं जेलेंस्की नए सिरे से अपनी नीति पर पुनर्विचार कर रहे हो यह भी नहीं माना जा सकता। कस्टमर का यह वक्तव्य कि हमारे पास यूक्रेन में न्यायपूर्ण और स्थाई शांति सुनिश्चित करने के लिए एक साथ आने का अवसर है जो उनकी संप्रभुता और सुरक्षा सुनिश्चित करगा ट्रंप के रवैया के कारण ही आया है। स्थिति ऐसी हैं जिसमें कोई अचानक स्वयं को दोषी मानकर पीछे हटने के लिए तैयार नहीं होग। यूरोपीय देशों में तत्काल सबसे ज्यादा सक्रिय ब्रिटेन और फ्रांस को भी अपनी शक्ति की सीमाओं का आभास होगा।

अमेरिका के साथ यूरोप की सुरक्षा व्यवस्था इतनी आबद्ध है कि वह इससे बिल्कुल अलग हटकर नई सशक्त सुरक्षा प्रणाली उत्पन्न नहीं कर सकते। ब्रिटेन का तो नाभिकीय ढांचों तक अमेरिका के साथ अविच्छिन्न जुड़ाव है। उनको पूरी तरह अलग कर अमेरिका के विरुद्ध जाना इस समय असंभव लगता है। इसलिए उनके अंदर भी नए सिरे से मंथन चल रहा है। यद्यपि मैक्रो ने ट्रंप की बातों को अपनी दृष्टि से काटा तथा कहा कि वे यूक्रेन को शस्त्र देकर कीमत नहीं ले रहे हैं जैसा वह कह रहे हैं कतु वह भी एकपक्षीय बात ही थी।

ट्रंप के नीति का एक पहलू शायद यही है कि एक बार सभी के समक्ष इतना कर आक्रामक करो तथा ऐसे तेवर दिखाओ जिसकी उन्हें कल्पना नहीं हो ताकि सभी दबाव में आकर युद्ध रोकने के लिए तैयार हो। ट्रंप अड़े रहते हैं तो भविष्य में एक सहमतिकारक समझौता संभव है। कम से कम तत्काल विश्व के हित में होगा और आगे इस पर शांति की कोशिश सकती है।

क्या होगा अगर गर्मियों में रोज खाएं एक चम्मच गुलकंद?

जवाब जानकर आज ही इसे खरीद लाएंगे आप

गर्मियों की चिलचिलाती धूप और तेज लू से राहत पाने के लिए लोग न जाने क्या-क्या उपाय करते हैं। ठंडी चीजें, महंगे जूस, आइसक्रीम या फिर एयर कंडीशनर की ठंडी हवा। मगर क्या आपने कभी सोचा है कि एक साधारण-सी चीज, जो आपके घर के पास वाली पंसारी की दुकान पर आसानी से मिल जाती है, गर्मी से राहत दिलाने में जादू कर सकती है?

जी हां, हम बात कर रहे हैं गुलकंद की- गुलाब की पत्तियों से बना मीठा, स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर स्वादिष्ट मुरब्बा। अब सवाल ये उठता है कि क्या होगा अगर आप रोज गर्मियों में सिर्फ एक चम्मच गुलकंद खाएं?

आइए जानते हैं इस मीठी औषधि के हैरान कर देने वाले फायदे :

गुलकंद का सबसे बड़ा गुण यही है कि यह शरीर को भीतर से ठंडक देता है। गर्मियों में शरीर में 'हीट' बढ़ जाती है, जिससे सिरदर्द, नकसीर, थकान, और चिड़चिड़ापन हो सकता है। रोजाना एक चम्मच गुलकंद खाने से ये सारी समस्याएं कम हो जाती हैं। यह शरीर का तापमान संतुलित करता है और गर्मी से होने वाले साइड इफेक्ट्स को रोकता है।

डाइजेशन का रखे ख्याल

गर्मियों में अक्सर पेट की समस्याएं हो जाती हैं, जैसे गैस, एसिडिटी, जलन, और अपच। गुलकंद इन सभी समस्याओं से राहत दिलाता है। इसमें फाइबर होता है जो पाचन क्रिया को दुरुस्त रखता है। खाना खाने के बाद एक चम्मच गुलकंद लेने से पेट हल्का महसूस होता है और कब्ज की शिकायत भी नहीं होती।

चेहरे को दे चमक और मुहांसों से दिलाए राहत

गुलकंद एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है जो शरीर से टॉक्सिन्स बाहर निकालता है। इसका असर आपकी त्वचा पर सीधा दिखाई देता है। जो लोग गर्मियों में पिपल्स, रैशेज या स्किन एलर्जी से परेशान रहते हैं, उनके लिए गुलकंद वरदान साबित हो सकता है। नियमित सेवन से त्वचा साफ, मुलायम और चमकदार बनती है।

माउथ फ्रेशनर के साथ ओरल हेल्थ बूस्टर भी

गुलकंद ना सिर्फ स्वाद में अच्छा होता है, बल्कि यह माउथ फ्रेशनर की तरह काम करता है। इसकी तासीर ठंडी होती है, जिससे मुंह में ठंडक बनी रहती है और सांसों की बदबू दूर होती है। साथ ही यह मसूड़ों को मजबूती देता है और मुंह के छालों में भी राहत पहुंचाता है।

नींद न आने की समस्या में फायदेमंद

क्या आपको गर्मियों में रात को नींद नहीं आती? तो गुलकंद जरूर आजमाएं। आयुर्वेद के अनुसार गुलकंद मानसिक शांति देने में मदद करता है। एक गिलास दूध के साथ रात में एक चम्मच गुलकंद लेने से नींद बेहतर आती है और मानसिक तनाव भी कम होता है।

एनर्जी बढ़ाए और थकान दूर करे

गुलकंद में नेचुरल शुगर और कई प्रकार के पोषक तत्व होते हैं जो शरीर को ऊर्जा देते हैं। गर्मियों में जब शरीर सुस्त महसूस करता है, तब गुलकंद एक नेचुरल एनर्जी बूस्टर की तरह काम करता है। इसे खाने से शरीर में फुर्ती बनी रहती है और थकान महसूस नहीं होती।

कैसे करें डाइट में शामिल?

- रोज सुबह खाली पेट या दोपहर के भोजन के बाद एक चम्मच गुलकंद खाएं।
- गर्म दूध के साथ रात में भी लिया जा सकता है, खासकर अगर नींद की समस्या हो।
- बच्चों को भी दिया जा सकता है, लेकिन मात्रा कम रखें।

एक महीने तक सुबह बासी मुंह पीकर देखें दो गिलास पानी

शरीर में नजर आएंगे कमाल के बदलाव

नई दिल्ली : क्या आप जानते हैं कि सुबह उठते ही बिना मुंह धोए दो गिलास पानी पीना आपकी सेहत के लिए कितना फायदेमंद हो सकता है? जी हां, यह एक छोटा-सा बदलाव आपके लाइफस्टाइल में बड़ा फर्क ला सकता है। अगर आप एक महीने तक रोज सुबह खाली पेट पानी पीने की आदत बना लें, तो शरीर में कुछ ऐसे कमाल के बदलाव (Drink Water In The Morning Benefits) देखने को मिलेंगे, जिनकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। चलिए जानते हैं इस असरदार उपाय के बारे में विस्तार से।

सुबह बासी मुंह पानी पीने का क्या मतलब है?

जब आप रातभर सोते हैं, तो आपका शरीर डिटॉक्स मोड में चला जाता है। सुबह उठने पर मुंह में लार (saliva) होती है जो पाचन क्रिया के लिए बेहद फायदेमंद होती है। ऐसे में बिना कुल्ला किए या ब्रश किए पानी पीने से ये लार पेट में जाती है और कई समस्याओं से बचाती है।

कितना पानी पीना चाहिए?

सुबह उठते ही दो गिलास (४००-५०० मि.ली.) गुनगुना या नॉर्मल टेम्प्रेचर का पानी पीना सबसे अच्छा माना जाता है। चाहें तो इसमें थोड़ा नींबू या मेथी दाना भी मिला सकते हैं (ब्रश के बाद) लेकिन एकदम साधारण पानी भी बेहद असरदार है। एक महीने में शरीर में दिखेंगे ये चौंकाने वाले बदलाव

सुबह बासी मुंह पानी पीने से पेट साफ रहता है और कब्ज जैसी समस्याएं दूर होती हैं। गैस, अपच, और एसिडिटी जैसी तकलीफें धीरे-धीरे खत्म होने लगती हैं।

त्वचा होगी दमकती और जवां : जैसे-जैसे शरीर से टॉक्सिन्स बाहर निकलते हैं, आपकी स्किन में नेचुरल ग्लो आता है। पिपल्स, दाग-धब्बों और ऑयली स्किन की परेशानी में काफी हद तक राहत मिलती है।

वजन घटाने में मिलेगी मदद : यह आदत मेटाबॉलिज्म को बढ़ावा देती है जिससे फैट बर्न तेज होता है। अगर डाइट और एक्सरसाइज का भी ध्यान रखें, तो एक महीने में फर्क साफ दिखेगा।

डिहाइड्रेशन नहीं होगा : रातभर बिना पानी के रहने के बाद सुबह सबसे पहले शरीर को पानी देने से डिहाइड्रेशन नहीं होता और एनर्जी बनी रहती है।

इम्युनिटी होगी मजबूत : जब शरीर समय पर टॉक्सिन्स बाहर निकालता है और पाचन सही रहता है, तो इम्यून सिस्टम भी अच्छा काम करने लगता है। बार-बार बीमार पड़ने की संभावना घटती है।

हार्ट और किडनी रहेंगे हेल्दी : यह आदत ब्लड प्रेशर को संतुलित करती है और किडनी की सफाई में मदद करती है, जिससे ये दोनों अंग बेहतर तरीके से काम करते हैं।

इन बातों का रखें ध्यान :

-पानी पीने के बाद कम से कम ३० मिनट तक कुछ न खाएं।

-गुनगुना पानी और तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी सबसे फायदेमंद माना जाता है।

-शुरुआत में एक गिलास से शुरू करें, धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाएं।

-सर्दी-जुकाम वाले मौसम में बहुत ठंडा पानी न पिएं।

क्यों फायदेमंद है यह आदत?

सुबह का समय शरीर को रिबूट करने का होता है। जैसे मोबाइल को रीस्टार्ट करने से वह बेहतर काम करता है, वैसे ही सुबह का पानी शरीर को रीस्टार्ट करता है। यह न केवल एक डिटॉक्स ड्रिंक है, बल्कि एक लाइफस्टाइल है जो लंबे समय तक आपको हेल्दी बनाए रख सकता है।

सावधान! गर्मियों में वॉक करते समय करे ना ये गलती?

गर्मी का मौसम शुरू हो चुका है। इस मौसम में सेहत का कुछ ज्यादा ही ख्याल रखना पड़ता है। इसके लिए लोग हेल्दी लाइफस्टाइल फॉलो करते हैं। हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन करते हैं। रसीले और मौसमी फलों को अपनी डाइट में शामलि करते हैं। योगा और व्यायाम करने से भी खुद को सेहतमंद रखा जा सकता है। गर्मी के दनिों में पसीना बहुत आता है। इस कारण लोग वॉक करने से कतराते हैं। कई बार उन्हें वॉक करने का सही समय भी नहीं मालूम होता है। इससे वो गलतयिां कर बैठते हैं।

अगर आपको भी गर्मी में वॉक करने का सही समय और इससे मलिने वाले फायदों के बारे में नहीं मालूम है तो ये लेख आपके काम आ सकता है। आज हम आपको इन सबक बारे में वस्तिार से जानकारी देने जा रहे हैं। आइए जानते हैं वस्तिार से-

सुबह या शाम : सही समय चुनें

गर्मी में वॉक करने का सबसे बेहतर समय सुबह ५:३० से ७:३० के बीच या फिर शाम को ६:३० के बाद का होता है। इस समय सूरज की किरणें तेज नहीं होती हैं और तापमान भी कम होता है, जिससे शरीर पर अधिक दबाव नहीं पड़ता। दोपहर के समय चलना शरीर को डीहाइड्रेट कर सकता है और हीट स्ट्रोक का खतरा भी बढ़ा सकता है।

कतिनी देर चलना है?

अगर आप वजन घटाने के मकसद से चल रहे हैं तो रोजाना कम से कम ३० से ४५ मिनट तक तेज गति में वॉक करना सही हो सकता है। शुरुआत में अगर शरीर इसके लिए तैयार नहीं है तो १५-२० मिनट से शुरू करें और धीरे-धीरे समय और स्पीड दोनों बढ़ाएं।

ध्यान रखें ये बातें

- खूब पानी पिएं
- हल्के और सूती कपड़े पहनें
- सनस्क्रीन लगाना न भूलें
- शरीर के संकेतों को समझें

गर्मी में वॉक करने के फायदे

- ब्रस्कि वॉक से शरीर की कैलोरी तेजी से बर्न होती है। इससे आपका वजन तेजी से कम होता है।
- खाना खाने के कुछ समय बाद हल्की वॉक करने से डाइजेशन बेहतर होता है। इससे अपच और गैस जैसी समस्याएं कम होती हैं।
- सुबह या शाम वॉक करने से शरीर में ऑक्सीजन और ब्लड सर्कुलेशन दोनों बेहतर होता है। इससे पूरे दिन थकान कम लगती है।
- गर्मियों में वॉक करने से मूड बेहतर होता है। इससे स्ट्रेस को भी कम कयिा जा सकता है।
- रोजाना वॉक करने से हाई ब्लड प्रेशर और डायबिटीज के मरीजों का शुगर लेवल नयिंत्रति रहता ह ै।
- वॉक करने से शरीर के टॉक्सिन्स बाहर निकलते हैं, इससे स्कनि ग्लोइंग बनती है।
- वॉकिंग से शरीर को थकावट महसूस होती है और साथ ही दिमाग शांत होता है, जिससे नींद की क्वालटिी में सुधार होता है।

शादी-शुदा कपल रिश्ते में दूर रखे दूरियां

पति-पत्नी का रिश्ता कभी प्यार कभी तकरार वाला होता है लेकिन अगर मनमुटाव ज्यादा बढ़ जाए तो रिश्ते में दूरियां आने लगती हैं. कई बार आपसी मतभेद दोनों लोगों के बीच इतनी बड़ी खाई पैदा कर देते हैं जिससे रिश्ता टूटने तक की नौबत आ जाती है. ऐसे में जरूरी है कि कपल अपने बीच की तकरार को जल्द से जल्द सुलझाने का प्रयास करें.

हर शादी-शुदा जोड़े के बीच मन-मुटाव आम बात है. यह रिश्ता कभी प्यार कभी तकरार वाला होता है लेकिन अगर मनमुटाव ज्यादा बढ़ जाए तो रिश्ते में दूरियां आने लगती हैं. कई बार आपसी मतभेद दोनों लोगों के बीच इतनी बड़ी खाई पैदा कर देते हैं जिससे रिश्ता टूटने तक की नौबत आ जाती है. ऐसे में जरूरी है कि कपल अपने बीच की तकरार को जल्द से जल्द सुलझाने का प्रयास करें. ऐसे में जब हम ऐसी ३ चीजें बता रहे हैं जिनको ध्यान में रखकर आप अपने रिश्ते में आ रही खटास को कम कर सकते हैं.

पार्टनर को वक्त दें

यूं तो हर रिश्ते को मजबूत बनाकर रखने के लिए उसे वक्त देना जरूरी है लेकिन पति-पत्नी के रिश्ते में ये बेहद जरूरी चीज है. आजकल की बिजी लाइफ में कामकाजी पति-पत्नी के बीच एक-दूसरे के लिए समय निकालना काफी चुनौतीपूर्ण हो जाता है लेकिन यह आपके रिश्ते के लिए हेल्दी नहीं है. पति-पत्नी के बीच दूरियां दरार का काम करती हैं जो आगे आने वाले वाले समय में इस रिश्ते को बेहद कमजोर कर देती हैं.

बातचीत है बेहद जरूरी

आपने अक्सर सुना होगा कि जंग से ज्यादा बातचीत लड़ाई-झगड़ों को सुलझाने के लिए जरूरी होती है. अगर आपको पार्टनर की किसी बात का बुरा तो उसे बातचीत के जरिए जल्द से जल्द सुलझाने का प्रयास करें. इगो या बातचीत ना करना किसी भी रिश्ते को कमजोर करने के लिए काफी होता है. आपके पता भी नहीं चलता है कि ये छोटा सी गलती आपके रिश्ते में दरार ला सकती है.

गलती स्वीकार करें

आमतौर पर ऐसा होता है कि हमने जाने-अनजाने में कोई ऐसी गलती हो जाती है जो दूसरे का दिल दुखा देती है लेकिन हम गुस्से में अपनी उस गलती को देख नहीं पाते हैं. ऐसा करना बिलकुल भी सही नहीं है. जब भी आपके साथ कुछ ऐसा हो या आपकी वजह से आपके पार्टनर को ठेस पहुंचे तो छोटा सा सॉरी बोलने में देर ना करें. आपका छोटा सा सॉरी आपके बीच दूरियां पैदा होने के रिस्क को कम कर देता है.

गर्मी में आंखों को भी चाहिए स्पेशल केयर

गर्मियों में हमें हमारी सेहत का खास ख्याल रखना होता है। इन दिनों हमें कई बीमारियां घेर सकती हैं। डहिाइड्रेशन की समस्या हो सकती है। हमारे शरीर में अगर कोई चीज सबसे सेंसटिवि होती है तो वो हैं हमारी आंखें। दरअसल, गर्मी का मौसम हमारी आंखों (Eye Care During Heat) के लिए भी कई परेशानयिां लेकर आता है। ऐसे में आंखों पर जहां गर्मी का सीधा असर देखने को मिलता है, वहीं गर्मी से बचने के लिए आंखों को खास देखभाल की भी जरूरत होती है।

हालांकि कुछ खास वटिामन्सि और मनिरल्स (Essential Nutrients For Eyes) होते हैं जो हमारी आंखों की खास देखभाल करने में सक्षम होते हैं। आज हम आपको इसके बारे में विस्तार से जानकारी देने जा रहे हैं। आइए जानते हैं-

वटिामनि ए : Vitamin A आंखों की सेहत के लिए सबसे अहम माना जाता है। यह रेटिना को स्वस्थ रखने में मदद करता है और रात में देखने की क्षमता को बेहतर बनाता है। गर्मी में अक्सर आंखों में सूखापन या जलन की समस्या होती है, जिसमें विटामिन A काफी फायदेमंद होता है। गाजर, पपीता, आम, पालक, शकरकंद, दूध और अंडे विटामिन A के अच्छे स्रोत हैं।

विटामिन सी : गर्मी के मौसम में धूल और प्रदूषण के कारण आंखों में जलन या लालपन की समस्या हो सकती है। विटामिन C एक एंटीऑक्सीडेंट के रूप में काम करता है जो आंखों को इंफेक्शन से बचाता है। नींबू, आंवला, संतरा, अमरूद, टमाटर और हरी मिर्च में विटामिन सी अच्छी मात्रा में पाया जाता है।

विटामिन ई : उम्र बढ़ने से आंखों में कमजोरी आना या धुंधलापन सामान्य होता है। विटामिन E उम्र से जुड़ी आंखों की समस्याओं जैसे मोतियाबिद से बचाव में सहायक होता है। इसके लिए बादाम, सूरजमुखी के बीज, मूंगफली, एवोकाडो और हरे पत्तेदार सब्जियों को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं।

ओमेगा-३ फैटी एसिड : गर्मी में आंखों का ड्राई होना आम समस्या है। ओमेगा-३ फैटी एसिड आंखों में नमी बनाए रखने में मदद करता है और आंखों की थकान को भी कम करता है। इसके लिए आप अखरोट, अलसी के बीज, चिया सीड्स और मछली से ओमेगा-३ फैटी एसिड पा सकते हैं।

जिंक : जिंक एक ऐसा मिनरल है जो शरीर में विटामिन A को रेटिना तक पहुंचाने का काम करता है, जिससे आंखों की रोशनी में सुधार आता है। अगर आप चना, दालें, कद्दू के बीज, तिल, अंडा और दूध को डाइट में शामिल करते हैं तो इससे आपको फायदा मिलेगा।

डिस्क्लेमर : यह लेख केवल सामान्य जानकारी के लिए है। यह किसी भी तरह से किसी दवा या इलाज का विकल्प नहीं हो सकता। ज्यादा जानकारी के लिए हमेशा अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

मोबाइल नहीं, मट्टिी में है बचपन का असली मजा

मैदान में खेलने से बच्चों को मिलते हैं ये फायदे

आजकल की भागदौड़ भरी जदिगी में लोगों को अपने लिए तक समय नहीं मलि पा रहा है। लोग अपने परिवार के लिए भी टाइम नहीं नकिाल पा रहे हैं। ऐसे में बच्चों का भी वकिास ठीक ढंग से नहीं हो रहा है। अमीरों के बच्चों की जम्मिेदारी तो ज्यादातर दाई मां के हाथों में होती है। वे बाहर खेलने की उम्र में मोबाइल (childhood without screens) पर समय देते हैं। लेकनि क्या आपको पता है कि बच्चे के शारीरिक, मानसिक और व्यक्तिगत रूप से विकास के लिए बाहर खेलना बेहद जरूरी होता है।

दरअसल, खुले मैदान में खेलने से बच्चों का वकिास (kids playing outside) तेजी से होता है। इससे वे अंदर से मजबूत बनते हैं। उनका शरीर कई बीमारियों से लड़ने में सक्षम होता है। आज हम आपको बहार खेलने से सेहत को होने वाले फायदों के बारे में बताने जा रहे हैं। आइए जानते हैं वस्तिार से-

तनाव करता है दूर

शाम के समय बाहर खेलने से बच्चों के दमिाग का वकिास होता है। थकान भी दूर होती है। दरअसल खेलते समय हमारा दिमाग खुश रहने वाले हार्मोन (जैसे डोपामिन और एंडॉर्फिन) बनाता है, जिससे मूड अच्छा होता है और चिता कम हो जाती है।

सेहत बनती है मजबूत

शारीरिक खेल जैसे फुटबॉल, क्रिकेट, बैडमिटन या दौड़ने से शरीर में ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है। इससे बच्चों के शरीर की हड्डियां भी मजबूत होती हैं। मसल्स एक्टिव होते हैं। कुल मलिाकर बाहर खेलने से बच्चों की इम्युनटिी स्ट्रॉन्ग होती है। बच्चों को तो बाहर खेलना ही चाहिए लेकनि जब भी बड़ों को समय मलि, वे भी ऐसा कर सकते हैं। इससे उन्हें भी कई फायदे मलिेंगे।

नींद आती है अच्छी

अगर आपका बच्चा समय से न तो सो रहा है और न उठ रहा है तो आपको उसे बाहर खेलने के लिए जरूर भेजना चाहिए। इससे समय पर उसे नींद भी आ जाएगी। सुबह वह टाइम पर उठ भी पाएगा। दरअसल खेलने से शरीर थकता है और दिमाग शांत होता है, जिससे रात को गहरी नींद आती है। शाम को थोड़ा खेलना ही बच्चों को कई बड़े फायदे दे सकता है।

पढ़ाई में आता है फोकस

बच्चों और स्टूडेंट्स के लिए शाम को खेलना तो बहुत जरूरी होता है। इससे उनकी एकाग्रता बढ़ती है। दिमाग भी तेज होता है और पढ़ाई में मन लगता है। कुल मलिाकर खेल उनके मानसकि वकिास के लिए बेहद जरूरी होता है।

नए दोस्त बनते हैं

जब आपका बच्चा बाहर खेलने के लिए जाता है तो इससे उसकी सोशल लाइफ बेहतर हो सकती है। आपके बच्चे के नए दोस्त बनते हैं। इससे उन्हें खुशी तो मलिती ही है, लेकनि वो कुछ न कुछ नया भी सीखते हैं। इससे उनका अकेलापन भी दूर हो सकता है। आत्मवश्विास भी बढ़ता है।

'आत्ममुग्धता और आराम से बचें', कप्तानी में भविष्य पर स्टीव वॉ की रोहित को सलाह

नई दिल्ली : न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज और फिर बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में हार के बाद से कप्तान रोहित शर्मा की क्रिकेट के सबसे बड़े प्रारूप में खेलने को लेकर खूब आलोचना हो रही है। मीडिया रिपोर्ट्स में यह बातें भी सामने आईं कि रोहित टेस्ट को अलविदा कह देंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और उन्होंने खुद इसका खंडन किया। अब ३७ साल के रोहित को ऑस्ट्रेलिया के महान क्रिकेटर स्टीव वॉ ने टेस्ट को लेकर सलाह दी है। स्टीव वॉ का मानना है कि आलोचनाओं का सामना कर रहे रोहित को अगर भारतीय क्रिकेट की सेवा करना जारी रखना चाहते हैं तो उन्हें आत्ममुग्ध नहीं होना चाहिए और आराम नहीं करना चाहिए।

भारत का अगला असाइनमेंट इंग्लैंड के खिलाफ जून में पांच मैचों की टेस्ट सीरीज है। इस सीरीज की शुरुआत के साथ टीम इंडिया अपने २०२५-२७ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) चक्र की शुरुआत करेगी। कुछ रिपोर्ट्स में यह दावा किया गया था कि रोहित को इस सीरीज के लिए कप्तानी से हटा दिया जाएगा और जसप्रीत बुमराह को जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। रोहित के भविष्य को लेकर उठ रहे सवालों के बीच वॉ ने कहा कि भारत की कप्तानी का फैसला रोहित को खुद करना चाहिए।

स्टीव वॉ ने कहा, 'कप्तानी का फैसला पूरी तरह से उन पर निर्भर है। वह अकेले ही इस समस्या का समाधान कर सकते हैं। उन्हें खुद को आईने में देखना होगा और कहना होगा कि क्या मैं अब भी कप्तान बनना चाहता हूं या भारत के लिए खेलना चाहता हूं? क्या मैं प्रतिबद्ध हूं? क्या मैं इसके लिए पर्याप्त समय और प्रयास कर रहा हूं? अपने देश के लिए खेलना एक सौभाग्य और सम्मान की बात है।'

'आप आत्मसंतुष्ट या आराम से नहीं रह सकते'

'लॉरियस वर्ल्ड स्पोर्ट्स अकादमी' के सदस्य वॉ ने कहा, 'आप आत्मसंतुष्ट या आराम से नहीं रह सकते।' रोहित ३० अप्रैल को ३८ वर्ष के हो जाएंगे। बांग्लादेश, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछली तीन टेस्ट सीरीज में उनका प्रदर्शन खराब रहा था। उन्होंने खराब फॉर्म का हवाला देते हुए इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी टेस्ट से बाहर होने का फैसला किया था। भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने घर में ३-० से और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ३-१ से टेस्ट सीरीज में हार का सामना करना पड़ा था।

'शुभमन गिल में महान कप्तान बनने के सभी गुण मौजूद'

राशिद खान ने गुजरात टाइटंस के कैप्टन की तारीफ की

मुंबई : आईपीएल २०२५ में सोमवार को गुजरात टाइटंस ने कोलकाता नाइट राइडर्स को हराकर इस सीजन की अपनी छठी जीत दर्ज की। टीम आठ में से छह मैच जीतकर अंक तालिका में शीर्ष पर है। कप्तान शुभमन गिल के ९० रन की बदौलत गुजरात ने २० ओवर में तीन विकेट पर १९८ रन बनाए। जवाब में कोलकाता की टीम २० ओवर में आठ विकेट पर १५९ रन ही बना सकी। गिल को प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया। अब गुजरात से खेलने वाले अफगानिस्तान के दिग्गज स्पिनर राशिद खान ने गिल की तारीफ की है और कहा है कि उनमें एक महान कप्तान बनने के सभी गुण हैं।

राशिद खान का कहना है कि आईपीएल में प्रदर्शन का दबाव विश्व कप से अधिक है और गुजरात टाइटंस के कप्तान के रूप में गिल के पास एक बेहतरीन कप्तान के रूप में अपनी साख साबित करने और साहसिक फैसले लेने का शानदार मौका है। राशिद ने जियो हॉटस्टार की खास सीरीज 'जेन गोल्ड' में कहा, 'एक लीडर के तौर पर गिल का भविष्य बहुत उज्जवल है। केवल एक बल्लेबाज के रूप में ही नहीं बल्कि जिस तरह से वह सोचते हैं और खेल को समझते हैं उसमें भी वह शानदार हैं।'

राशिद ने कहा, 'वह एक योजना के साथ मैच में आते हैं। वह बहुत शांत हैं और जब आप उन्हें मैदान पर देखते हैं, जिस तरह से वह टीम, गेंदबाजों को संभालते हैं तो उनमें एक महान लीडर बनने के सभी गुण हैं। वह इतनी बड़ी लीग में कप्तानी कर रहे हैं और यहां दबाव विश्व कप से भी ज्यादा है।' इस २६ वर्षीय लेग स्पिनर ने कहा, 'एक कप्तान के तौर पर यह उनके लिए दबाव में प्रदर्शन करने और साहसिक फैसले लेने का सबसे अच्छा मौका है।'

साल २०२२ में हार्दिक पांड्या के अस्वस्थ होने पर कुछ समय के लिए गुजरात की कप्तानी करने के अपने अनुभव के बारे में राशिद ने कहा कि इससे उन्हें एक लीडर के तौर पर विकसित होने में मदद मिली और इससे उन्हें राष्ट्रीय टीम के लिए और बेहतर प्रदर्शन करने में भी मदद मिली।उन्होंने कहा, 'यह एक सपना सच होने जैसा था। उस अनुभव ने मुझे आगे बढ़ने में मदद की, न केवल लीग में बल्कि तब भी जब मैं अफगानिस्तान का नेतृत्व करने के लिए वापस लौटा। मैंने अलग तरह से सोचना शुरू किया।'

राशिद ने कहा, 'चार-पांच साल पहले की तुलना में मेरी मानसिकता में बदलाव आया है। कप्तानी के उस दौर ने मेरी मदद की और २०२४ (टी२० विश्व कप) में अफगानिस्तान के सेमीफाइनल तक पहुंचने में भूमिका निभाई। आईपीएल आपको अलग-अलग परिस्थितियों और स्थितियों से रूबरू कराता है जो आपको परखती हैं और एक बेहतर नेतृत्वकर्ता और खिलाड़ी के रूप में आकार देती हैं।' राशिद ने कहा कि टी२० प्रारूप में गेंदबाजों के लिए स्थिति बेहद चुनौतीपूर्ण हो गई है क्योंकि बल्लेबाज अब हाई रिस्क वाले शॉट खेलने से नहीं हिचकिचाते।

पुणे में महिला ग्रैंड प्रिक्स

जीनर को हराकर कोनेरू हंपी की बढ़त

पुणे : शतरंज में, भारतीय ग्रैंडमास्टर कोनेरू हंपी ने सातवें राउंड में चीनी ग्रैंडमास्टर झू जिनर पर महत्वपूर्ण जीत के साथ पुणे में महिला ग्रैंड प्रिक्स में बढ़त हासिल की। हंपी ने शुरुआत में झू को चौंका दिया, धीरे-धीरे मध्य-खेल में अपनी स्थितिगत बढ़त को बढ़ाया। दबाव में, झू ने एक लंबे सामरिक क्रम में एक गलती की, जिससे अंततः उसे हार का सामना करना पड़ा। इस बीच, दिव्या देशमुख ने मंगोलियाई अंतर्राष्ट्रीय मास्टर बटखुयाग मुंगुंटुल पर एक प्रमुख जीत के साथ खुद को शीर्ष स्थान के लिए विवाद में रखा। अगर दिव्या आज के खेल में झू जिनर को हराने में सफल होती हैं, तो उनके पास टूर्नामेंट की बढ़त हासिल करने का एक मजबूत मौका होगा।

पुणे ग्रैंड प्रिक्स २०२५, FIDE महिला ग्रैंड प्रिक्स सीरीज़ का पाँचवाँ चरण, २०२६ महिला कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए योग्यता प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

'घरेलू मैदान पर खेलने का कोई खास फायदा नहीं', उभरते स्पिनर विपराज निगम का बयान

मुंबई : आईपीएल २०२५ होम और अवे प्रारूप में तो खेला जा रहा है, लेकिन इस साल टीमें अपने घरेलू परिस्थितियों का फायदा उठाने में कामयाब नहीं हो सकी हैं। ज्यादातर टीमों को अपने घर और बाहर दोनों जगह हार का सामना करना पड़ा है। इसी कड़ी में दिल्ली कैपिटल्स के उभरते क्रिकेटर विपराज निगम ने कहा है कि आईपीएल में घरेलू मैदान पर मैच खेलने का टीमों को ज्यादा फायदा नहीं मिलता। आईपीएल २०२५ में अब तक ३९ मैच खेले जा चुके हैं। दिल्ली का सामना आज इकाना स्टेडियम में लखनऊ से है।

कई टीमों को घरेलू परिस्थिति में जीतने में आई मुश्किलें

आईपीएल में पहले ऐसा होता था कि टीमें अपने घर पर मन मुताबिक पिच तैयार करती थी और उन्हें इसका फायदा भी मिलता था। बाहर से हारकर आने के बाद टीमों के पास यह विश्वास होता था कि वह घर पर सात में से ज्यादा से ज्यादा मैच जीत जाएंगी, लेकिन अब ऐसा नहीं है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, चेन्नई सुपरकिंग्स, कोलकाता नाइट राइडर्स और पंजाब किंग्स जैसी टीमों को मौजूदा सत्र में घरेलू मैदान पर दबदबा बनाने में मुश्किल हो रही है।

यूपी टी२० लीग में खेल चुके हैं विपराज

उत्तर प्रदेश के इस २० वर्षीय लेग स्पिनर को लखनऊ में खेलने के अपने पिछले अनुभव पर भरोसा है। उन्होंने उत्तर प्रदेश टी२० लीग के दौरान सुपर जाएंट्स के खिलाफ मुकाबले में यहां खेला था। विपराज ने कहा, 'यूपी टी२० लीग यहीं हुई थी इसलिए हमने यहां टी२० मैच खेले हैं। समीर और मुझे मैदान का अंदाजा है इसलिए हम उसी प्रक्रिया का पालन करने की कोशिश करेंगे जो हमने यूपी टी२० में की थी।'

अपनी जिम्मेदारियों पर बोले विपराज

गेंद के साथ दिल्ली कैपिटल्स के ढांचे में खुद को एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने वाले विपराज ने अपनी दोहरी जिम्मेदारी के बारे में बताया। उन्होंने कहा, 'मैं खुद को एक ऑलराउंडर मानता हूं। मुझे गेंद के साथ-साथ बल्ले से भी योगदान देना है।' परिवार और घरेलू दर्शकों के सामने खेलने पर विपराज ने कहा, 'हां, सभी मैच में बहुत दबाव और घबराहट होती है। जब आप अपने परिवार और कोच के सामने खेलते हैं तो यह और भी बढ़ जाती है।'

सीनियर खिलाड़ियों को दिया श्रेय

विपराज ने दिल्ली की टीम के सीनियर खिलाड़ियों को खुद को स्थापित करने में मदद करने का श्रेय दिया। उन्होंने कहा, 'मुझे प्रत्येक मैच में सीनियर खिलाड़ियों से सलाह मिलती है। हमें सीनियर खिलाड़ियों से कुछ मदद मिलती है। कुछ खिलाड़ी ऐसे हैं जो पिछले साल लखनऊ में थे और इस साल भी यहां हैं। हम अपनी टीम बैठक में उन पहलुओं पर बात करते हैं और उसके अनुसार योजना बनाते हैं।'

पहलगाम आतंकी हमला

आईपीएल मैच में खिलाड़ी काली पट्टी बांधकर देंगे श्रद्धांजलि

चीयरलीडर्स भी नहीं होंगी

हैदराबाद : सनराइजर्स हैदराबाद और मुंबई इंडियंस के खिलाड़ी पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति शोक जताने के लिए आईपीएल मैच के दौरान काली पट्टी बांधकर खेलेंगे जबकि इस मुकाबले में चीयरलीडर्स नहीं होंगी और आतिशबाजी भी नहीं की जाएगी। इस हमले में २६ लोगों की मौत हो गई थी। टीमें इस घटना से प्रभावित लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक मिनट का मौन भी रखेंगी। इस घटना की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निंदा की गई है।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने बताया- दोनों टीम के खिलाड़ी काली पट्टी बांधकर खेलेंगे और कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में अपनी जान गंवाने वालों की याद में एक मिनट का मौन रखेंगे। उन्होंने कहा- मुंबई इंडियंस और हैदराबाद के बीच होने वाले मैच के दौरान चीयरलीडर्स नहीं होंगी। कोई पटाखे नहीं फोड़े जाएंगे। बता दें कि विराट कोहली सहित तमाम दिग्गज क्रिकेटरों ने हमले में मारे गए लोगों की फैमिली के प्रति शोक व्यक्त किया है।

दक्षिण कश्मीर के इस लोकप्रिय पर्यटन स्थल पर मंगलवार को आतंकवादियों ने लोगों पर गोलीबारी की जिसमें कम से कम २६ लोग मारे गए और कई अन्य घायल हो गए। पाकिस्तान स्थित प्रतिबंधित लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) आतंकी समूह का हिस्सा 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (टीआरएफ) ने हमले की जिम्मेदारी ली है। इस हमले की दुनिया भर में कड़ी निंदा की गई है।

वर्ष २००८ के मुंबई आतंकी हमलों के बाद भारतीय क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय क्रिकेट संबंध तोड़ दिए और हाल ही में चैंपियंस ट्रॉफी के लिए देश का दौरा करने से इनकार कर दिया जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) को दुबई में तटस्थ स्थल का प्रावधान करना पड़ा।

गुजरात टाइटंस तालिका में शीर्ष पर बरकरार

गिल-सुदर्शन चमके

मुंबई : गुजरात टाइटंस ने गत चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) को ३९ रनों से हराया और शीर्ष पर अपना दबदबा मजबूत किया। गुजरात ने शुभमन गिल और साई सुदर्शन के अर्धशतकों से २० ओवर में तीन विकेट पर १९८ रन बनाए थे, जवाब में केकेआर की टीम २० ओवर में आठ विकेट पर १५९ रन ही बना सकी। इस सीजन यह पहली बार है जब केकेआर ने लगातार दो मैच गंवाए हैं।

यह गुजरात की आठ मैचों में छठी जीत है और वह १२ अंक लेकर शीर्ष पर बना हुआ है। गुजरात ने इस सीजन दो मुकाबले गंवाए हैं। वहीं, केकेआर की आठ मैचों में यह पांचवीं हार है और वह तीन जीत के साथ छह अंक लेकर अंक तालिका में सातवें स्थान पर है।

केकेआर के लिए रहाणे ने बनाए सर्वाधिक रन

केकेआर के लिए सबसे ज्यादा रन कप्तान अजिंक्य रहाणे ने बनाए जो ३६ गेंदों पर पांच चौकों और एक छक्के की मदद से ५० रन बनाकर आउट हुए। लक्ष्य का पीछा करते हुए केकेआर की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने गुरबाज का विकेट जल्द गंवा दिया। इसके बाद रहाणे ने सुनील नरेन के साथ मिलकर टीम को संभाला, लेकिन नरेन १७ रन बनाकर आउट हो गए। फिर रहाणे अच्छी पारी खेलते रहे, लेकिन दूसरे छोर पर उनका कोई बल्लेबाज साथ नहीं दे सका। केकेआर के लिए बड़ी साझेदारी नहीं बन पाना हार का बड़ा कारण बना। केकेआर की यह लगातार दूसरी हार है। इससे पहले उसे पिछले मैच में पंजाब किंग्स ने हराया था।

केकेआर के लिए रहाणे के अलावा आंद्रे रसेल ने २१, रिंकू सिंह ने १७, वेंकटेश अय्यर ने १४ और रमनदीप सिंह ने एक रन बनाए, जबकि इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर उतरे अंगकृष रघुवंशी २७ और हर्षित राणा एक रन बनाकर नाबाद लौटे। गुजरात के लिए प्रसिद्ध कृष्णा और राशिद खान ने दो-दो विकेट लिए, जबकि मोहम्मद सिराज, ईशांत शर्मा, वॉशिंगटन सुंदर और आर साई किशोर को एक-एक विकेट मिले।

इससे पहले, केकेआर ने इस मैच में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया, लेकिन गुजरात के लिए गिल और सुदर्शन ने शतकीय साझेदारी की जिसकी मदद से टीम बड़ा लक्ष्य देने में सफल रही। गुजरात के लिए गिल ने ५५ गेंदों पर १० चौकों और तीन छक्कों की मदद से सबसे ज्यादा ९० रन बनाए, जबकि सुदर्शन ३६ गेंदों पर छह चौका और एक छक्के की मदद से ५२ रन बनाकर आउट हुए।

गिल-सुदर्शन की शानदार साझेदारी

पहले बल्लेबाजी करते हुए गिल और सुदर्शन ने गुजरात को शानदार शुरुआत दिलाई और पहले विकेट के लिए ११४ रन जोड़े। गिल ने ३४ गेंदों पर और सुदर्शन ने ३३ गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया। सुदर्शन का इस सीजन का यह पांचवां और गिल का तीसरा पचासा था। गुजरात के लिए गिल और सुदर्शन की जोड़ी हिट है। गिल और सुदर्शन के नाम ही गुजरात के लिए सबसे बड़े ओपनिंग साझेदारी करने का रिकॉर्ड है। गिल और सुदर्शन के बीच ११४ रनों की साझेदारी गुजरात के लिए चौथी बड़ी ओपनिंग साझेदारी है। गिल और सुदर्शन तीन बार गुजरात के लिए शतकीय साझेदारी कर चुके हैं जिसमें एक बार २१० रनों की पार्टनरशिप भी शामिल है।

आईपीएल २०२५ में आग उगल रहा गिल-सुदर्शन का बल्ला

गिल और सुदर्शन आईपीएल २०२५ में शानदार फॉर्म में चल रहे हैं। इन दोनों की जोड़ी इस सीजन धमाल मचा रही है। गिल और सुदर्शन ने इस सत्र में आठ पारियों में अब तक ४४८ रन जोड़े हैं और इनका औसत ५६.० का रहा है। गिल और सुदर्शन ८.९३ के रन रेट से रन बना रहे हैं। इन दोनों की जोड़ी ने इस सीजन दो बार शतकीय और दो बार अर्धशतकीय साझेदारी की है। इतना ही नहीं, इन दोनों ने आईपीएल २०२४ से अब तक १७ पारियों में कुल आठ बार ५०+ साझेदारी की है जो सर्वाधिक है। इन्होंने इस मामले में ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा को पीछे छोड़ा जिन्होंने आईपीएल २०२४ से अब तक २२ पारियों में सात बार ५०+ साझेदारी की है।

गिल और सुदर्शन के बीच इस साझेदारी को आंद्रे रसेल ने तोड़ा। सुदर्शन के आउट होने के बाद जोस बटलर क्रीज पर आए और उन्होंने गिल के साथ मिलकर गुजरात की पारी को गति दी। गिल ने आक्रामक बल्लेबाजी जारी रखी, लेकिन वह शतक लगाने से चूक गए। इस दौरान गिल और बटलर के बीच दूसरे विकेट के लिए ५८ रनों की साझेदारी हुई जिसे वैभव अरोड़ा ने तोड़ा।

इसके बाद हर्षित राणा ने राहुल तेवतिया को खाता खोले बिना आउट कर गुजरात को तीसरा झटका दिया। बटलर और शाहरुख खान ने अंत में तेज खेलने की कोशिश की, लेकिन केकेआर गुजरात को २०० रन बनाने से रोकने में सफल रही। गुजरात के लिए बटलर २३ गेंदों पर आठ चौकों की मदद से ४१ और शाहरुख पांच गेंदों पर एक छक्के की मदद से ११ रन बनाकर नाबाद लौटे। केकेआर की ओर से वैभव अरोड़ा, हर्षित राणा और आंद्रे रसेल को एक-एक विकेट मिले।

दिग्गज अचंत कमल ने लिया संन्यास

हार के साथ खत्म हुआ दिग्गज का करियर

नई दिल्ली : दिग्गज टेबल टेनिस खिलाड़ी शरत कमल का शानदार अंतरराष्ट्रीय करियर डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर टूर्नामेंट के प्री क्वार्टर फाइनल में हमवतन स्नेहित सुरवज्जुला से हारने के साथ खत्म हो गया। शरत के खिलाफ वाइल्ड कार्ड धारक स्नेहित ने लगातार तीन गेम में ११-९, ११-८, ११-९ से जीत दर्ज की। शरत ने बाद में मिस्र के उमर अस्सार के खिलाफ एक प्रदर्शनी मैच खेला जिसमें दर्शकों को उनके असाधारण कौशल की एक और झलक देखने को मिली।

शरत ने अपने विदाई संबोधन में कहा, 'कहीं ना कहीं मुझे लगा कि यह काफी है और मैं कोर्ट के दूसरी तरफ से खेल को कुछ वापस देने की संभावना तलाशना चाहता था।' ४२ वर्षीय शरत ने कहा कि वह प्रशासनिक भूमिका निभाना चाहेंगे।

उन्होंने कहा, 'मैंने एक खिलाड़ी के तौर पर अपना काम कर दिया है, मुझे लगता है कि मैंने एक खिलाड़ी के तौर पर देश के लिए काफी योगदान दिया है और मैं एक प्रशासक, या एक कोच, एक मेंटर या फिर एक वरिष्ठ खिलाड़ी के तौर पर भी योगदान देना चाहता हूं।'

इससे पहले २४ वर्षीय मानव ठक्कर ने डब्ल्यूटीटी स्टार कंटेंडर सेमीफाइनल में पहुंचने वाला पहला भारतीय पुरुष खिलाड़ी बनकर इतिहास में अपना नाम दर्ज करा लिया। मानव ने जर्मनी के आंद्रे बर्टेल्समेयर और ओलंपिक पदक विजेता दक्षिण कोरिया के लिम जोंग-हून के खिलाफ पांच गेम में लगातार दो मैच जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

मानव ने बर्टेल्समेयर को १०-१२, १२-१०, १५-१३, ६-११, ११-५ से हराया और फिर जोंग-हून को ५-११, १२-१०, ३-११, ११-६, ११-१ से शिकस्त दी। हालांकि स्नेहित का सफर फ्रांस के थिबॉल्ट पोरेट के खिलाफ हार के साथ खत्म हो गया। पोरेट ने ११-४, ६-११, ११-७, ११-६ से जीत हासिल की।

दिन के अंत में एक रोमांचक मुकाबले में दक्षिण कोरिया के लिम जोंग-हून और एन जे-ह्युन ने शीर्ष वरीयता प्राप्त तोमोकाजू हरिमोटो और सोरा मत्सुशिमा को ११-४, ११-१३, ११-२, ११-३ से हराकर पुरुष युगल खिताब पर कब्जा किया।

महिला युगल फाइनल में जापान की मिवा हरिमोटो और मियू किहारा ने शिन यू-बिन और रयू हन्ना को ९-११, ११-९, १३-११, १२-१४, ११-५ से हराया।